# पड़ा क्यों सोय रहा ठगियन में !

## वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

**(सत्संदेश अप्रैल1963 में प्रकाशित प्रवचन)**

**मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में, पड़ा क्यों सोवे रहा ठगियन में ।**

आज आपके सामने स्वामीजी महाराज की बाणी रखी जा रही है। किसी महात्मा की बाणी लो, वेह एक ही मज़मून का ज़िक्र कर रहे हैं, कि भाई तुम कौन हो ? तुम अपने आप को जानो ।

**चेतन रूप बिचारो अपना ।**

इस वक्त तुम अपने आपसे भूल चुके हो, जिसम का रूप बने बैठे हो, और प्रभु को भूल चुके हो। दुनिया के लेवल से तुम दुनिया को देख रहे हो, जिसम के लेवल से दुनिया को देख रहे हो। दुनिया किसी और रंग में नजर आ रही है, जो उसका असल रंग नहीं है। Matter is changing जिसम भी मैटर का बना हुआ है, मादा (जड़ प्रकृति) का। सारा जगत भी मादा का बना हुआ है। समझे। तो दोनों चीजें एक ही रफ्तार से Change हो रही हैं, तब्दील हो रही हैं। हम जिसम का रूप बने बैठे हैं, इसलिये, जब दो चीजें एक ही रफ्तार पर चल रही हो, तो वह खड़ी भासती हैं। असल में वह दोनों बदल रही हैं।

मैंने कई बार मिसाल देकर समझाया है, कि एक दरिया है। तुम बेड़ी में सवार हो, बेड़ी उस तरफ जा रही है जिस तरफ कि दरिया बह रहा है। दोनों ही एक रफ्तार से जा रहे हैं। मालूम नहीं होता कि तुम चल रहे हो। खड़े मालूम होते हो। अगर कोई भाई उस बेड़ी से बाहिर खड़ा हो जाये, वह देखता है, बेड़ी भी बह रही है और पानी भी बह रहा है। वह पुकारता है, हमदर्दी से कि अरे भाईयों, तुम बह रहे हो। वह देखते हैं। गिर्दा-गिर्द कि भई पानी भी खड़ा है, हम भी खड़े हैं। यह क्या कहता है ? हम इस वक्त जिसम का रूप बने बैठे हैं। जिसम भी बदल रहा है, जगत भी बदल रहा है। इसलिये दोनों स्थिर भासते हैं। हालांकि सारे महात्मा यही कहते हैं कि जगत असत है और आत्मा सत है। जगत हमेशा स्थिर रहने वाली जगह नहीं है, वह बदल रहा है और आत्मा स्थिर है, हमेशा रहने वाली चीज है और हमे क्या भास रहा है ? हमें भास रहा है, कि यह सब कुछ हमेशा एक रस रहने वाला है।

महाभारत में ज़िकर आता है कि यक्ष ने युधिष्ठर से सवाल किया है कि महाराज दुनिया में

सबसे अचरज बात कौन सी हो रही है ? कहने लगे कि भई देखने की बात है, हम आँखों से रोज देखते हैं, ऐसे जिसम को कोई चीज छोड़ जाती है तो उसको चार भाई उठा कर शमशान भूमि में पहुंचाते हैं। अपने हाथों से दाग देते हैं। मगर उनको यह यकीन नहीं आता कि यह जिसम छोड़ना है। इससे बढ़कर और अचम्भे की बात क्या हो सकती है ? देखने की बात है। आँखों से देखते हैं मगर अन्धेरगर्दी है। कंधों पर उठाकर शमशान भूमि में पहुंचा कर कहते हैं कि इसको अपने हाथों से दाग दो, बल्कि खोपड़ी भी फोड़ते हैं, मगर यकीन नहीं आता कि हमारी खोपड़ी को भी किसी ने फोड़ना है। समझे ! कहते हैं, इससे बढ़कर और आश्चर्य की बात क्या है ? हैरान करने वाली बात है। पढ़ेलिखे, आलिम बेइल्म, अमीर गरीब, सब एक ही धोखे में जा रहे हैं। तो सन्त महात्मा हमको क्या सिखलाते हैं, कि आप पिण्ड से, इस बेड़ी से, बाहर आना सीखो। फिर तुमको हर एक चीज़ सही रंग में, सही हालत में नज़र आयेगी। जैसे बेड़ी से बाहर खड़ा हुआ इन्सान देखता है कि बेड़ी भी बह रही है और दरिया भी बह रहा है। ऐसे ही तुम देखने लगोगे कि जिसम भी बदल रहा है और सब कुछ बदल रहा है। शास्त्र का सिद्धान्त सत मालूम होने लगेगा कि जगत असत है और आत्मा सत है।

अब जो भी महात्मा आये उन्होंने इसी तरफ हमारी तवज्जो दिलाई, ख्वाहे वह संस्कृत के वेद-मंत्रों द्वारा दिलाई या फारसी ज़बान में बतलाई या अरबी में उनको अरबिस्तान वालों को बतलाई, मगर चीज इसी को बयान किया है कि यह हमेशा रहने वाली जगह नहीं, इसके अन्तर मकीन (निवासी) है इस जिसम का। वह तुम हो। तुम आत्मा देहधारी हो। आत्मा उस प्रभु की अंश है। हम सब उसी के बच्चे हैं। सब महात्माओं का यही उपदेश रहा है। ज़बानों को इस वक्त छोड़ दो। ज़बानों में जो लिखा है ज़बानों द्वारा, उसको समझो। वह क्या कह रहे हैं ? सारे वेद-शास्त्र पढ़कर फर्ज़ करो एक आदमी इकट्ठा करके सब पढ़े, पढ़ता रहे, पढ़-पढ़ कर सारी उम्र गुज़री क्योंकि वेद शास्त्रों का पढ़ना कोई मामूली बात नहीं। अव्वल संस्कृत ज़बान पर काबू पाना अब इस ज़माने में, जबकि संस्कृत रायज (प्रचलित नहीं), उस वक्त तो ऐसे थी जैसे आज तुम हिन्दी या उर्दू बोल रहे हो, उस ज़माने में। आज उसको सीखने के लिये बड़ी मुशक्कत और मेहनत करनी पड़ेगी। सारे वेद शास्त्र पढ़ कर आखिर किस नतीजे पर पहुंचे ? जगत असत है, और आत्मा सत है। सत वस्तु की तलाश करो। वेद मंत्रों में यह आया है कि हे परमात्मा, हमें असत से सत की तरफ ले चलो। अगर हम इस ज़बान में बयान कर लें, तो क्या हर्ज़ है ? बात तो असत से सत की तरफ जाना है न, असत का निर्णय कर लो, सत को ग्रहण कर लो, काम बन गया। ख्वाहे संस्कृत पढ़ के कर लो, ख्वाहे अरबी पढ़ के कर लो, ख्वाहे पंजाबी पढ़ के कर लो। सवाल तो यह है कि जो वेद शास्त्र बयान कर रहे हैं, वह इसी जिस्म का बयान हैं ।

यह जो जिस्म तुम लिये फिरते हो, यह सबसे बड़ा वेद, सबसे बड़ा ग्रन्थ, सबसे बड़ा कुरान, सबसे बढ़ कर बाईबल, यही है। और इन धर्म पुस्तकों में किस बात का ज़िकर है ? इसमें इसी बात का ज़िकर है, जिसम का, जिसमें तुम रह रहे हो। इसी को पढ़ो। सारी दुनिया की किताबें तुम पढ़ डालो जब तक इस दो वरकी किताब को नहीं पढ़ते कुछ नहीं मिलेगा। सब महात्मा यह कहते हैं, Tap inside, कि जाओ, अन्तर जाओ। दो भूमध्य पीछे हटो। जाओ गुरु के पास। ''महाजनाम गुह्याम।'' महाजन लोग इस गुफा में सफर करते हैं। यह सब महात्मा कहते हैं। अब यह ज़रूरी नहीं कि वह ज़बानें पढ़ कर ही सीखो। अगर कोई आमिल मिलता है तो जल्दी कर लो। आखिर नफ्से-मज़मून तो वही है ना। अब स्वामीजी महाराज क्या फर्माते हैं, कि ऐ भाई तू आत्मा है, आत्मा देहधारी है। यह जिसम तू पैदा हुये साथ लाया था। यह पहिला संगी साथी है हमारा। इसके सबब से सारे ताल्लुकात पीछे बने। जब जाते हो, पिण्ड को छोड़ते हो, यह जिसम सब ही जवाब दे जाता है। बताओ इनमें तुम्हारा मित्र कौन हुआ ? मित्र की तारीफ सन्तों ने की है -

**जिन्हां दिसन्दियाँ मेरी दुर्मत बजे मित्र असाडड़े से ही।**

जिन के देखने से हमारी दुमर्ति का नाश हो। यह दुर्मत है ना कि असत, सत भास रही है। जिनके मिलने से असत, असत नज़र आये और सत, सत भासे, ऐसे लोग हमारे सच्चे मित्र हैं। कहते हैं, ऐसे लोग कितने हैं दुनिया में ? कहते हैं, सारी दुनियां में तलाश की, ऐसे मित्र कहीं-कहीं मिलते हैं। अब यह जिसम साथ नहीं जाता भई, हमें तो ऐसे मित्र की ज़रूरत है, जो हमारे साथ रहे, सदा अंग-संग रहे, पिण्ड छोड़ जाये तो भी साथ रहे वह कौन है ? वह परमात्मा है। वह हमारी आत्मा की आत्मा है। उसके आधार पर हम सब कार-ब्योहार कर रहे हैं। या वह हस्तियाँ हैं, जिनके अन्तर परमात्मा इज़हार कर रहा है, जिस पोल पर परमात्मा काम कर रहा है। उसका नाम आप कुछ रख लो। वह जंगलों, बियाबानों, पहाड़ों में, हर वक्त तुम्हारे अंग-संग रहेंगे, तुम्हारी सहायता करेंगे और जब जिसम छोड़ोगे, मरते समय या जीते जी पिण्ड से ऊपर आने के लिये, वह आकर उस वक्त सामने होंगे। जिसमें वह समर्था है वह गुरु है। अरे भई गुरु को भी यह कहा गया, कि वह जिसम नहीं है ।

**गुरु को मानुस जानते जन्म जन्म होयं स्वान ।**

यही एक भुलेखा (भूल) है, जिसमें दुनियां जा रही है। अरे भई वह पावर जो उस पोल पर काम करती है ना, उसका नाम गुरु है। हां पोल पर इज़हार ज़रूर करती है।

**ब्रह्म बोले काया के ओले, काया बिन ब्रह्म क्या बोले ।**

काया के ओले (परदे में) बैठ कर वही पावर काम करती है। जहां इसको एहसास हो गया।

**जैसे में आवे खसम की बाणी, तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो ।**

ऐसी हस्ती का नाम साधु सन्त और महात्मा हैं। काया के बगैर, कहते हैं, ब्रह्म कैसे बोले? अब हम सब कायाधारी हैं ना ! हम जो काया में बैठे हैं। हमजिन्सियत (जाति भाव) कुदरती खासा है। अब जब तक जिसमानी पोल पर बैठी हुई कोई आत्मा, जिसका उससे मिलाप है, समझे, वह ऐसे ही मल-मूत्र के थैले में आकर उसका एहसास रख कर हमें भी उस तरफ का एहसास कराये, उसका नाम कहते हैं गुरु। जिसमानी पोल पर वह पान्धे (अध्यात्म) का काम करता है। वह कहता है, मैं भी जिसम नहीं और तू भी जिसम नहीं है, छोड़ जिसम और चल ऊपर। जब ऊपर जाते हो, तो सामने आ खड़ा होता है। जिसमें वह समर्था है, उसका नाम गुरु है।

**बा तो बाशद दर मकानो लामकां ।**
**चूं बिंमानी अज सराओ अज दुर्का ॥**

जो तुम्हारे साथ रहे, जब तुम इस दुनिया में हो, जंगलों, पहाड़ों, बियाबानों में भी। वह समर्थ पुरुष है भई ,

**वली अल्लाह रा बर कयासे खुद मगीर ।**
**दर नविश्तन यकसां आयद शेरो शीर ॥**

कहते हैं लिखने में लफ्ज़ शेर और शीर एक जैसे नज़र आते हैं। मगर उनमें बड़ा भारी फर्क है। एक फाड़कर खा जाने वाला जानवर है, शेर; एक आधार देने वाली वस्तु है, शीर (दूध) ऐसे ही इन्सान और इन्सान में बड़ा भारी फर्क है। समझे ! ज़ाहिरा शकल इन्सानी है, मगर अन्तर में एक रूहानी है, एक जिसम के बन्धनों में घिरा पड़ा है। जो रूहानी पुरुष है, पिण्ड से ऊपर जाने वाला पुरुष है, आसमानों पर उसकी रूह सफर करती है,वह भई इन्सान ज़रूर है, शकल इन्सानी रखता है, मगर कुछ और भी है। जो और है, वह साधु है, वह सतगुरु है। जब तक उससे Contact (परिचय) नहीं होता, सच्चे मानों में इन्सान की तरक्की नहीं होती। वह पावर क्या है ? वह परमात्मा ही, जिस भाव से याद करो, उसी शकल में आता है। जिस भाव से उसको याद करो, वैसी सूरत लेकर आ जाता है।

**बनामें ऊ कि ऊ नामे नदारद ।**
**बहर नामे कि खानी सर बरारद ॥**

तो आप यहां देखेंगे कि ऐसे अनुभवी पुरुष और प्रभु में क्या फर्क है ? एक लोहे का गोला है, आग में डाल दिया तो वह आग का रूप बन गया। अब क्या फर्क है ? तो मेरे यह अर्ज़ करने

का भई सिर्फ मतलब यही है, कि ऐसे महापुरुष जिनकी आँखें खुली हैं, उसके अनुभव को पा चुके हैं, ऐसे हजारों में से बल्कि लाखों में से कोई एक, उनकी महिमा यह है। बाकी उसके नाम लेवा बन गये हजारों लोग क्या कुछ नहीं कर रहे, गुरुडम करके वह बदनाम हो रहे हैं। यहां जब लफ्ज गुरु बता जाता है। उसकी ऐसी हस्तियों से गर्ज़ नहीं है जो Acting posing बनावट या चार सौ बीस बन रहे हैं, लोगों को खाली जिस्मानियत की ही तालीम देकर, इससे ऊपर जाने का न उनको खुद पता है, न दूसरों को वह ले जा सकते हैं। उनसे हमारी गर्ज़ नहीं है। यहां लफ्ज़ साधु और सन्त, मैं तो यह भी कहूंगा, साधु और सन्त यह दो लफ्ज़ ही छोड़ दो, यह काफी बदनाम हो चुके हैं। कोई और नया लफ्ज जोड़ दो, पर ऐसी हस्ती की ज़रूर ज़रूरत है जो समर्थ पुरुष हैं, जो आपको उसका Contact (परिचय) दे सकता है। थोड़ा दे, मगर दे तो सही ना भई! तब काम बनेगा, नहीं तो नहीं। तो ऐसे पुरुष क्या कहते हैं ? कि ऐ भाई जितने तेरे संगी और साथी हैं, इसमें तेरा मित्र कोई भी नहीं है। तू कौन ? तू तो आत्मा है। तू जिसम बना बैठा है। जिसम भी जवाब दे जाता है। जिसम के जितने ताल्लुकात हैं, बताओ वह कैसे साथ जायेंगे ? मित्र तो वह है ना, जो हमारे साथ रहे या परमात्मा है, या सन्तों ने और थोड़ी तारीफ की है ।

**नानक कचड़िया संग तोड़ ढूंढ सज्जन सन्त पकियां ।**

कि भई, तू कच्चों का संग छोड़ दे, तू पक्के सज्जनों को तलाश कर। कहते हैं, वह कौन है ? कि वह सन्तजन हैं ।

**एह जीवन्दे बिछड़े, ओह मोया न जाये संग छोड़ ।**

दुनियां में लोग आप को, कुछ गरीबी में, बीमारी में, नादारी और लाचारी में, छोड़ जायेंगे। हद बहुत सदाचारी भी हों, हद अन्त समय तक ।

**एह हंस अकेला जाई ।**

धिड़कता मर जाता है। कोई मदद नहीं करता। ऐसी हस्ती की संगत-सोहबत में बैठो जो तुमको उस राज से जो पिण्ड से ऊपर जाने का है, पिण्ड को छोड़ने का है, जो अन्त समय जाते हुए सबको तजरुबा करना पड़ता है, वह जीते जी करा दे और साथ अन्त समय सामने आ खड़ा हो। ऐसे का नाम है। कहते हैं, वह सन्तजन हैं। आज तो भेख का नाम सन्त बन गया भाई, जिसने दो चार कथा सुना ली, याद कर ली, सुनाते फिरे। हमारे हजूर फ़र्माते थे, कि किसी ने खोती वाही किसी ने पोथी वाही। इस हालत में दुनिया जा रही है। और बिचारे लोगों को तलख तजरुबा होने पर, क्योंकि जो मन इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, आखिर गिरेगा, अवश्य। ज़बानी जमाखर्च का तो यह मज़मून नहीं।

**यह करनी का भेद है नाही बुद्धि बिचार ।**
**कथनी छांड करनी करो तो कुछ पाओ सार ॥**

यह करनी का मज़मून है, रहनी का मज़मून है। तो जब उनको तलख तजरुबा होता है, तो वह कहते हैं It is all gurudom. सबको छोड़ो। अरे भई सब को न छोड़ो, ढूंढो कोई सन्त मिलता है कि नहीं ? तब तो काम बनेगा, नहीं तो नहीं बनेगा ।

तो स्वामीजी महाराज फ़र्मा रहे हैं, कि जितने संगी और साथी हैं जिनमें तुम रह रहे हो, इनमें तेरा मित्र कोई नहीं। जिस्म साथ सबसे पहिले आता है और जाते हुए साथ नहीं जाता। जब जिस्म, जो सबसे पहिला संगी है, वह साथ तुम्हारे नहीं जाता, अरे भई इसके कारण तुम्हारे और ताल्लुकात स्त्री, बाल-बच्चे, दोस्त मित्र, यह वह, जो दोस्त बने हैं, ये तुम्हारे साथ कैसे जायेंगे ? बड़ी मोटी बात है। समझे ! फिर कहते हैं ''पड़ा क्यों सोवे तू इन ठगियन में।'' कहते हैं ज़ाहिरा बड़े जेन्टलमैन, शरीफ आदमी मालूम होते हैं। बड़े प्रेम से बरतते हैं आपसे, और आपको पता नहीं लगता, और आपको लूट कर ले जाते हैं। ठग बड़ी मीठी-मीठी बातें करते हुए आपको लूट कर ले जाये आपको पता नहीं लगता। पीछे पता लगता है तुम लूटे गये।

कहते हैं, यह दुनिया में, यह जिस्म सबसे बड़ा ठग है, कहते हैं, यह हमेशा रहेगा, ठगी नहीं तो और क्या है ? सारी उम्र इसको पालते रहते हैं यह समझकर कि हमेशा यहीं रहेंगे, यह हमारा है, हम इसके हैं। तो यह ठगी नहीं तो और क्या है ? इसके ताल्लुकात बाल-बच्चे, स्त्री ये भी ठग हैं। कोई दुनिया के लोग आकर तुम्हारे घर से कोई चीज़ चुरा कर ले जायें, नुकसान तो हुआ, मगर तुम बच गये। एक और भाई आया तुम्हारे कपड़े भी उतार कर ले गया, तुमको नंगा छोड़ गया। नुकसान तो हुआ फिर भी तुम बच गये। एक आदमी और आया वह तुम्हारे जिस्म को तोड़ गया, टांग बाजू तोड़ गया नुकसान तो कर गया, मगर तुम अब भी बच गये, जिन्दा हो। एक और आता है, वह तुम्हारी सुरत पर कब्जा पाता है। बताओ वह सबसे ज्यादा जानी दुश्मन है कि नहीं ? वह कौन है ? यही बाल-बच्चे, स्त्री, दोस्त मित्र, दुनिया के ताल्लुकात की लम्पटता। एक बच्चा हो, खेलता हंसता इधर उधर फिरता है, आठ दस आदमी गिर्दा गिर्द हों, उनकी सुरत को खैंचे रखता है। वह सबसे बड़ा खतरनाक हुआ कि नहीं ? जितनी कोई चीज़ हमको प्यारी लग रही है, वह उतनी ही खतरनाक है, वह हमारी रूह पर कब्जा पा रही है, भई रूह को तो प्रभु के साथ लगाना था। वह उसमें खचित हो रही है। तो बाकी सब डाकुओं से यह ज्यादा खतरनाक डाकू है। बड़ा मीठा-मीठा, बड़ा साफ,

मालूम होता है, जेन्टलमैन की तरह आता है और तुमको लूटकर ले जाता है । तो कहते हैं, अरे भई ठगों में, आदमी जागता भी तो भी लूटा जाता है। अगर ठगों के दर्मियान तुम सो रहे हो तो फिर क्या हाल होगा ।

जिस तरह एक पिता बच्चे की अधोगति को देखकर उस पर रहम खा कर, उसको समझाता है, अरे भाई तू इनमें क्यों सो रहा है ? तू लूटा जा रहा है। हर मिनट तेरी सुरत की पूंजी दुनिया में खोई जा रही है। होश कर, इसको सम्भाल। दुनिया में कौन किसी का है, और कौन किसी का रह सकता है ? ''एह हंस अकेला जाई'' धिड़कता मर जाता है। उस वक्त, बताओ उसके लिए आपने क्या किया है ? यह एक ऐसा मजूमून है जो हर एक समाज के सामने है। तो ऐसा महापुरुष कहो, हमारी तरह शक्ल इन्सानी रखते हुए जिसने इसका अनुभव किया है, उसकी सोहबत में तुम बैठ जाओ। उसका नाम कुछ न रखो। झगड़ा पाक। आमिल कह दो, जो तुमको अन्तर की आँख खोलने पर, जैसा मैने पहिले कहा, बेड़ी से बाहर खड़ा कर दे, अपने आप हरेक चीज़ साफ हो जायेगी। धोखे की बात ही कोई नहीं। अनपढ़ है तो उसकी भी आँख खुल जायेगी, पढ़ा है तो उसकी भी आँख खुल जायेगी। हां इल्म आमिल के गले में फूलों का हार है। वह एक चीज़ को कई तरीकों से, खूबसूरती से तुम्हारे सामने पेश करेगा। अगर अनपढ़ भी, इल्म जिसके पास नहीं, उसकी डिग्रियां नहीं मिली, बाहर की इल्मियत के लिहाज़ से उसने कुछ ज्यादा तरक्की नहीं भी की तो भी वह बात कहेगा तो पते की कहेगा। वह देख कर बयान कर रहा है ।

पिशावर में एक बाबा भोज सिंह थे। कमाई वाले पुरुष थे। उनसे लोगों ने पूछा कि महाराज करनी और कथनी में क्या फर्क है, करने और कहने में क्या फर्क है ? कहने लगे, भई कहना, कहना है, और करना करना है। बड़े थोड़े लफ्ज़ हैं। कहणी कहणी है, और करना करना, कहण पंजाबी में कहते हैं, छपाकी को, पंजाबी भाषा में। छपाकी जब निकल आये तो बड़ी मीठी खाज होती है। आप रगड़ते हो और खाज होती है, और रगड़ते हो, छोड़ने को जी नहीं करता। मगर वह खाज फिर भी नहीं छूटती और खाज करो, वह सूज जाती है। कहते हैं, जो जबानी खर्च है ना, बयान करना, यह वह, यह छपाकी की तरह है। जो करना है, नारंगी का करना कहीं खिला हो, आधे मील से गुज़र रहे हो, तो खुशबू आयेगी उसकी। यह करने की जो कमाई है,वह खुशबू फैलाती है। दो लफ्ज़ों में बात कह दी। जो आमिल है, वह बहुत तरीकों से बयान करेगा। इन्होंने मतलब की बात कह दी। मतलब से मतलब है ना।

**यह करनी का भेद है नाही बुद्धि विचार ।**
**कथनी छांड करनी करो तो कुछ पाओ सार ॥**

क्राईस्ट ने कहा, If you love me keep my commandments (मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञा मानो) Let my words abide in you and you abide in me (मेरे वचनों को हृदय में बसा लो तुम मेरे हृदय में बसोगे) तरीका है ना ! बयान करने में इतना फर्क रह जायेगा। मगर बात वही है। तो अनुभवी पुरुष जब मिलता है तो आपको यह नज़र आने लगता है कि यह जिसम भी साथ नहीं। रोज पिण्ड को छोड़ोगे तो जिसम भी साथ कहां रह गया? तुम आत्मा की नज़र से ही दुनिया को देखोगे। हर एक चीज़ फिर अपने असल रंग में नज़र आने लग जायेगी। बात तो यही है। समझाने-बुझाने की ज़रूरत नहीं, अपने आप भासने लग जायेगा, वाकई भई जिसम भी अपना नहीं तो यह कहां के अपने हैं ? वह आत्म अनुभव में जागेगा फिर प्रभु अनुभव होने लगेगा। जब उसको पा जायेगा। उस अनुभव को पा कर हमेशा के आनन्द को पा कर दुनिया में रहते हुये दुनिया से अतीत रहेगा। तो स्वामीजी महाराज फर्मा रहे हैं, ऐ भाई ! जितने तेरे संगी और साथी हैं, इनमें तेरा सच्चा मित्र कोई भी नहीं। तू ठगा जा रहा है। यह ठग हैं ठग। ठगों में तो जागता पुरुष भी ठगा जाता है, अरे भाई तू तो सो रहा है।अरे भाई तू क्यों सो रहा है इन ठगों में ? हमदर्दी से कह रहे हैं ।

**चेत कर प्रीति करो सत्संग में, गुरु फिर रंग दे नाम अरंग में ।**

महात्माओं ने इस तरफ बड़ी तवज्जो दिलाई, यह सन्त महात्माओं ने मिसालें दे देकर समझाने का यतन किया है ।

**जग रचना सब झूठ है जान लियो रे मीत ।**

बडे साफ़ लफ्ज़ों में फर्माया। झूठ से मुराद जो हमेशा नहीं रहेगी। ऐ मित्र इसको अच्छी तरह से दिल में जान लो। कैसे हैं ? कहते हैं -

**कहो नानक थिर ना रहे ज्यों बारू की भीत ।**

जैसे रेत की दीवार बनी हो, वह कितनी देर रहेगी ? जब तक उसमें नमी है ना। जब नमी हटी, जरा सूरज चढ़ा, गिर गई। तो इसीलिये कहा, 'जग सुपना बाजी बनी।' कि एक बाजीगर के तमाशे की तरह है, यह आखिर मिट जायेगी। कब तक रहेगी ?

**कहां सो भाई मीत है देख नैन पसार ।**
**इक चाले इक चालसी सब को अपनी बार ॥**

भाई-भाई और मित्र कहां के ? ज़रा आँखें उघाड़ कर देख, खोल कर देख, कोई जा रहे हैं, कोई जाने को तैयार बैठे हैं और हमने भी जाना है।

**राना राव को न रहे रंक न तंग फकीर ।**
**बारी आपो अपनी कोई न बान्थे धीर ।।**

न बादशाह रहे न रय्यत रही, दुनियादार रहे न वली औतार रहे। जिसने जिस्म लिया उसने छोड़ा मुआफ करना। गुरु नानक साहब आये थे, जो काया ली थी वह छोड़ गये, गायब हो गई यह अलेदा बात रही। हजरत मोहम्मद साहब आये, छोड़ गये, भगवान कृष्णजी आये, काया छोड़ गये। काया तो छोड़ने वाली चीज़ है भाई। जब वेह छोड़ गये तो हम क्यों नहीं छोड़ेंगे ? तो इसमें जाने वाली चीज़ को जानना है। वह कौन है ? वह हम हैं। तो इसलिये सन्तों ने बार-बार बड़ा खोल-खोल कर समझाने का यत्न किया है कि अरे भाई फिर इस हालत में क्या करना चाहिये जब सब कोई जाने वाला है।

**कूड़ कूड़े नेह लगा बिसरिया कर्तार,**

जो फना (नाश) हो जाने वाली चीजें हैं उनके साथ हमारा प्यार लगा है। वह प्रभु जो फना नहीं होने वाला, वह भूल चुका है।

**किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चलण हार**

किससे दोस्ती करनी चाहिये भई। सारा जगत ही चलने वाला है। कौन रहा और कौन रह सकता है ? यह जिसम मिट्टी का ढेर है। Dust thou art unto dust returnest तुम्हारा जिसम, भाई तुम जो अब जिसम रूप बन बैठे हो ना यह जिसम मिट्टी का ढेर है, यह जिसम मिट्टी में मिला दिया जायेगा और तुम इससे जुदा होंगे। अब कहते हैं, ऐसी हालत में हमें करना क्या चाहिये जब सब तरफ से ही चलो चली का बाजार गर्म है। जिस ज़मीन पर हम मकान बना रहे थे, वह रेत की ज़मीन थी। जिस बेड़ी पर हम सवार थे, दरिया में जा रही थी, वह कागज की नाव थी कहो कब तक रहेगी ? इस बात को जानना है।

**जिन्नी चलण जानिया सो क्यों करे बिथाह ।**

जिन्होंने चलना जान लिया, दिल दिमाग में उनके यह बात घर कर गई, समझे, वह इतने झूठ के पसारे, गले काटने लोगों के बदखोई करनी बुरा चितवन करना, अरे भई कब करेगा, क्यों करेगा ? हम को मौत भूल चुकी है। हमें दुनिया अपने असल रंग में नज़र नहीं आ रही है। भई इसीलिये सत भास रही है। अरे भाई तेरा मित्र इनमें कौन है ? तो इस हालत में हमको क्या करना चाहिये ? अब स्वामीजी महाराज इसका थोड़ा सा उपदेश देते हैं कि हमें क्या करना चाहिये ? चेत कर। होश में आ। अरे भाई तू सो रहा है ।

**मोह माया सबो जग सोया इह भरम कहो किंव जाई ।।**

माया भूल को कहते हैं। हम अपने आपको भूल गये, जिसम का रूप बन गये, प्रभु को भूल गये। यही माया है। ''एह शरीर मूल है माया।'' माया का मूल है यह शरीर जब जिसम का रूप बन गये, यही माया हो गई कि नहीं ? तो कहते हैं माया में आये, मोह बन गया साथ, जिसम का मोह हो गया, बच्चों का मोह हो गया। अगर आँख खुल जाये, होश आये, अरे भाई यह भी मिट्टी का ढेर है। यक्ष सवाल करता है युधिष्ठर से वह कौन सी अचम्भे की बात है ? यही तो अचम्भे की बात है। हम आँखों से देखते हैं और यकीन नहीं आता। जैसे कपड़े पर चिकनाहट लगी हो, उस पर पानी डालो तो उस पर पानी ठहरता नहीं, तिलक जाता है। हमारे दिल में जगत की सतता की इतनी चिकनाहट लग चुकी है, उस पर कोई ज्ञान-ध्यान असर नहीं करता। हम पढ़ रहे हैं ना, पढ़ते हैं, बिचारते हैं, सारे महात्मा गला फाड़-फाड़ कर कहते हैं कि अरे भाई, तूने जाना है तूने जाना है। क्या दिल मानता है ? इतना रंग दुनिया का चढ़ चुका है कि इस पर कोई असर नहीं पड़ता है। तो कहते हैं चेत Awake (जाग) वेद भगवान कहता है। देखिये, एक ही बात कह रहे हैं। यह कहते हैं चेत। वेद भगवान कहता है जागो। यह कहते हैं चेतन हो भई, होश में आओ। गुरु अर्जुन साहब फुर्माते हैं, 'उठ जाग' एक ही बात कह रहे हैं। बताओ ज़बांदानी से हमारी गर्ज़ तो नफ्से मज़मून से है ना। कहते हैं, चेतो। चेत कर क्या करो ? ''प्रीति करो सत्संग में।'' सत्संग में प्रीति लगाओ। अब सत्संग किसको कहते हैं ? असल में गलतुलअवाम (गलत परम्परायें) बातें चल रही हैं। हम यह समझते हैं, जहां पर कोई लैक्चरबाज़ी हो, किसी ग्रन्थ पोथी का स्वाध्याय हो, कोई और ज़बानी जमा खर्च हो, उसका नाम सत्संग रखते हैं। अरे भई सन्तों ने ऐसी संगत का नाम सत्संग नहीं रखा। उन्होंने तारीफ दी है कि सत्संग किसको कहते हैं ?

**जै सतगुरु तै सतसंगत बणाँइ ।।**

जहां पर कोई सत्स्वरूप हस्ती बैठी हो, हजारों में उसका नाम सत्संग है, सत्स्वरूप हस्ती हो। यहां गुरुडम का सवाल नहीं मुआफ करना। अनुभवी पुरुष आत्म-तत्वदर्शी एक बैठा हो, हज़ारों उसके गिर्द बैठे हों, इसको हम सत्संग कहेंगे। एक जागता पुरुष है। हज़ार आदमी उसके गिर्दा गिर्द सो रहे हों, हम यह कहेंगे कि यह जागते पुरुष की संगत है। वह खुद जागा है, पहिले खुद जागे, फिर दूसरों को जगा सकता है। जो खुद ही मन इन्द्रियों के घाट पर जिसम का रूप बना बैठा है, ख्वाहे हजारों ग्रन्थ-पोथियाँ उसके दिमाग में भरी पड़ी हैं, मगर अनुभव तो नहीं है ना। तो ऐसे ही सोहबत का नाम सत्संग नहीं। वह न आप जागा है न तुमको जगा सकेगा। तो अनुभवी पुरुष की महिमा क्या है ? वह पिण्ड से खुद रोज़ ऊपर जाता है, तुमको

ऊपर लाने का तजरुबा कराता है। तुम्हारी अन्तर की आँख बन्द है, उसकी खुली है। तुम्हारी अन्तर की आँखें खोलता है। थाड़ी ज्योति नज़र आती है, थोड़ा तजरुबा नज़र आता है। उसके अन्तर के कान खुले हैं। हमारे अन्तर के कान बन्द हैं। वह हमारे अन्तर के कानों को खोलता है। ऐसी हस्ती का नाम है, गुरु। यही कुरान शरीफ ने कहा है कि हमारी आँखों और कानों पर मोहरें लगी हैं। किसी मुर्शद को पकड़ो जो इन मोहरों को तोड़े। तरीका बयान है ना। करना तो वही है। गुरु नानक साहब ने फ़र्माया –

**अखाँ बाजों देखणा बिन कन्नां सुणना ।**

आँखों के बगैर देखना है। अरे भाई वह आँख खुले जिससे वह नज़र आता है।

**नानक से अखियां बेअन्न जिन दिसन्डो मापरी ।**

ऐ नानक, वह आँखें और हैं, जिनसे वह नज़र आता है। समझे। आँखों के बगैर देखने वाला हो जाये, कानों के बगैर सुनने वाला हो जाये।

**पैरां बाजी चल्लणाँ बिन हत्थाँ करना ।**

यह पैर यहीं रह जाये, अन्दर के पैर खुलें और अन्तर के हाथ काम करें, जब पिण्ड से ऊपर आओगे। ऐसा जो कर सकता है

**नानक हुक्म पछाण के हुकमे अन्दर चलणा**

उस मालिक के हुकम को पहिचानने वाला हो जायेगा, अन्तर में नाम का Contact मिलेगा, उस प्रभु का तजरुबा होने लगेगा, उसको ध्याने वाला हो जायेगा। कहते हैं ऐसा पुरुष प्रभु से मिल जायेगा। बड़ी साफ बात है। बाहरी जिसम जिसमानियत का सवाल ही नहीं हम फंसे जहां हैं। तो कहते हैं, ज़रा चेतो। तो चेता हुआ पुरुष है, वही चिता सकेगा। आलिम आपको इल्म दे सकता है। इन्जीनियर आपको इन्जीनियरिंग सिखा सकता है। डॉक्टर आपको जिसम की साईन्स सिखला सकता है। और अनुभवी पुरुष ही आपको अनुभव का First-hand Contact (परिचय) दे सकता है। जहां कहीं भी उपदेश दिया है, यही दिया है। भगवान कृष्णजी ने जो फ़र्माया है गीता में, अगर तुम ज्ञान पाने के अभिलाषी हो तो किसी ऐसे महात्मा के पास जाओ जो आत्मतत्व दर्शी है, आत्मतत्व दर्शी। आलिमों से काम नहीं होगा। यही मौलाना रूम साहब ने कहा है –

**मर्दे हज्जी मर्दे हाजी रा तलब ।**
**ख्वाह हिन्दू ख्वाह तुर्को ख्वाह अरब्ब ।**

अगर तुमको हज करने की ख्वाहिश है तो किसी हाजी को साथ ले लो। समझे। कहते हैं,

वह कौन हो ? ख्वाहे हिन्दू हो, तुर्क हो या अरब हो, कोई फिक्र नहीं। हमें भई डॉक्टरी सीखनी है। डॉक्टर के पास जाओ जो इस जिस्म की साईन्स को जानता है। अरे भई आत्म अनुभव को पाना है तो जा किसी आत्म अनुभवी के पास, वह किसी समाज का हो, यह कोई सवाल नहीं। रविदास चमार हो सकता है। कबीर साहब जुलाहा हो सकता है, नाम देव छीम्बा हो सकता है। अरे भई सेना नाई भी हो सकता है, मुआफ करना। जो मालिक को मिले हैं, उनकी सोहबत में आपको मालिक का रंग आयेगा। बात तो यही है। जिस रंग में कोई रंगा है उसकी सोहबत में वैसा ही रंग तुमको मिल जायेगा ।

मौलाना रूम साहब ने एक मिसाल देकर समझाने का यत्न किया है। एक दिन, कहते हैं कि हम हमाम में गये। वहां हमको मिट्टी मिली। उसको हमने सूंघा, बड़ी खुश्बूदार थी। कहते हैं, मैंने उस मिट्टी से पूछा कि ऐ मिट्टी। तू सच बतला कि तू कस्तूरी है या अम्बर है ? क्या चीज़ है, जो इतनी खुश्बू तुम में भरी पड़ी है ? तो आप ही जवाब देते हैं, उसकी तरफ से, मिट्टी कहने लगी कि मैं हूं तो वही आजिज मिट्टी मगर कुछ मुदृत महक भरे खुश्बूदार फूलों के दर्मियान मेरा बास हो गया था। उनके जमाल ने, उनकी सोहबत और संगत में इतना मुझे बना दिया कि मैं इतनी खुश्बूदार हो गई। यही कबीर साहब ने फर्माया। सब महात्मा एक ही बात कहते हैं। ज़बांदानियों के झगड़ों में मत जाओ भई, नफ्से मज़मून को पकड़ो, वह क्या कह रहे हैं। कबीर साहब कहते हैं कि अगर तुम किसी गन्धी की दुकान पर जाओ, गांधी वह होते हैं, खुशबू जो बेचते हैं, इतर जो बेचते हैं। कहते हैं, उसकी दुकान पर बैठ जाओ। वह अगर आपको कोई शीशी दे दे तो अच्छा है, न भी दे तो तुम्हारे कपड़े तो महक जाते हैं ना ! मण्डल का असर होता है।

तो कहते हैं, क्या करो ? कहते हैं चेत कर प्रीत करो सतसंग में कि किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत संगत में प्यार पैदा करो Socalled (तथाकथित) महात्मा की नहीं भाई निर्णय करके देखो। ऐसे अनुभवी पुरुष हमेशा ही कमयाब रहे, अब भी कमयाब हैं। लाखों में कोई एक है।

**लाखन में कोई है नहीं कोटन में कोई एक ।**

गुरुबाणी कहती है, कोटन में कोई एक। अगर राजा जनक को, बड़ी साफगोई है, हिन्दोस्तान भर के सारे ऋषियों, मुनियों, महात्माओं में से एक अष्टावक्र मिले थे जो उनको ज्ञान का अनुभव करा सके तो आज कोई हज़ारों थोड़े होंगे ? जितने ज्यादा हों खुशी की बात है, मगर जब तक ऐसा अनुभवी पुरुष नहीं मिलेगा, काम नहीं बनेगा भई। सतसंग करो, किसी अनुभवी पुरुष, जागते पुरुष की सोहबत करो, वह तुमको अनुभव दे सकेगा बाकी नहीं। जो Acting posing (स्वांग रचना) से काम ले रहे हैं उनका तो क्या कहना भई, वह तो चार सौ बीस छोड़ कर आठ सौ चालीस है भई। है नहीं पास चीज, दूसरे को क्या चैक काट कर दे रहे हैं Honour कहां होंगे ?

**जिसदा साहब भुक्खा नंगा होवे, तिसदा नफर कियों रज़ खाय ।**

लिहाज़ नहीं करते भई, जिसकी तुमने गुलामी अख्त्यार की है, अगर उसके खुद पास खाने और पहिनने को कुछ नहीं है, आपको कहां देगा ? अनुभवी पुरुष के पास है। जिसके पास अनुभव नहीं वह आपको कहां से अनुभव देगा ? बड़ी मोटी बात है। तो कहते हैं सतसंग में प्रीति पैदा करो भई। सतसंग किसी सत्स्वरूप हस्ती के संग का नाम है। एक जागता पुरुष है, हज़ार सोये हैं, सबको जगा सकता है। एक अनुभवी पुरुष है, वह सबको अनुभव दे सकता है, जो भी उसके पास आये। यही एक निशानी है किसी अनुभवी पुरुष की। उसके बड़े-बड़े आडम्बरों की तरफ मत जाओ। किसी महात्मा के आडम्बरों की तरफ मत जाओ। उसके आगे प्रचारों की तरफ मत जाओ कि कितने नौकर-चाकर उसने रखे हैं। उसके बाहरी साज सामान की तरफ मत जाओ कि लोगों को कितना आराम मिल रहा है बल्कि देखो उससे मिलता क्या है ? क्या आप को कुछ Contact (परिचय) मिलता है ?

**सतगुरु मिले ताँ अखी वेखै ।**

अपनी आंखों से देखने वाले हो जाओगे। राजा जनक को अष्टावक्र ने पूछा, क्यों भई ज्ञान हो गया ? कहते हैं, हां महाराज हो गया। कुछ तजरुबा मिलना चाहिये। लेने वाला कहे कि कुछ मिला है, न कि देने वाला कहे कि दे दिया। दूसरे जो अनुभवी पुरुष नहीं होंगे वह आपको टालते रहेंगे, आप ऐसा करो भई, हमारा कहना मानो, हम यह कहते हैं, ऐसा करो, पूजो, पाँव धोओ, अमृत पियो, यह करो, वह करो, पचास बातें करेंगे।अभी तुम्हारा अधिकार नहीं बना, ठहरो, वक्त आयेगा तब होगा। अरे भई क्या एतबार है कि होगा भी कि नहीं ? जहां से तुम को कुछ Contact मिलता है सब महात्माओं की वाणी कहती है कि-

**सन्तन मुझको पूंजी सौंपी उतरियो मन का धोखा ॥**
**धर्म राय अब क्या करेगो जौं फाटो सगलो लेखा ॥**

फिर कहा,

**जियादान दे भक्ति लायन ।**

अपने जी का दान देना पड़ता है, भक्ति में जोड़ देते हैं। फिर भक्ति की तारीफ की है -

**गुरमुख भक्ति जित सहज धुन उपजै**
**गत मित तद ही पाई ॥**

कैसी भक्ति ? जिसमें सहज की ध्वनि अन्तर में उपज आये, ज्योति प्रकट हो जाये। इस भक्ति में जोड़ देता है, Contact देता है ।

**कोई जन हरि स्यों देवे जोड़ ।**

तो महात्माओं की वाणियाँ तो यही कह रही हैं भई, अरे भई यह आज भी सच है और उस वक्त भी सच थी। इससे दूर जाने वाले पुरुष हमेशा गुमराही में जायेंगे, बहुत न सही, थोड़ा सही जो कुछ न कुछ ज़रूर दे सके, ऐसे समर्थ पुरुष का नाम है सन्त या महात्मा। ऐसे महात्माओं को हमेशा ज़रूरत ही है, और रहेगी। इसके बगैर कल्याण नहीं। तो क्या कहते हैं, चेत कर। अरे भई तू सो रहा है, जाग। Awake arise and stop not till the goal is reached उठ खड़े हो, जागो पहिले, मोह माया में सारा जहान सो रहा है, यह भ्रम कैसे मिट सकता है ? कोई जागता पुरुष जो मोह माया में नहीं सो रहा वही जगाये तो जगाये, पिण्ड से ऊपर लाये, दूसरा कौन ला सकेगा ? यह गुरु अर्जुन साहब ने फर्माया -

**उठ जाग वटावड़िया तैं क्या चिर लाया ।**

ऐ रास्ते के मुसाफिर तू सो रहा है, उठ। देर क्यों कर रहा है ? फिर कहा ? ''मोहलत कुन्दड़िया जियो'' तेरी मोहलत, जो मिली थी, मनुष्य जीवन, वह खत्म हो रही है। तू किस काम में लोभायमान हो रहा है ? होश में आ। यही स्वामीजी महाराज फर्माते हैं, ''चेत कर प्रीत करो सतसंग में, गुरु फिर रंग दे तोहे नाम अरंग में,'' वह अनुभवी पुरुष की सोहबत ही सतसंग है ना। उसमें तुम बैठोगे वह नाम को जो रंग है ना, उसमें तुमको रंग देगा जिस पर और कोई दुनिया का रंग नहीं चढ़ सकेगा। दुनिया के रंग कहां से चढ़ते हैं ? पिण्ड से, इन्द्रियों के घाट से। जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आयेंगे तो नाम वहां मिलता है।

**अदृष्ट अगोचर नाम अपारा ।**

वह नाम बाहिरी दृष्टि का मज़मून नहीं और इन्द्रियों के घाट पर नहीं मिलता, अगोचर है। अपार नाम है। ''अतरस मीठा नाम प्यारा।'' जब उसको पा लोगे, वह ऐसा रंग देगा कि बाहर के रंग फिर नहीं चढ़ेंगे, दुनिया के रंग फिर तुम पर असर नहीं करेंगे। जब महारस आवेगा।

**जब ओह रस आवा इह रस नहीं भावा ।**

जब वह नाम रस आ जायेगा तो दुनिया के रस हमें लुभायमान नहीं करेंगे, कशिश नहीं करेंगे। जब ज्यादा रस मिल गया तो थोड़े रस क्यों खैंचेंगे तो यह कहते हैं, फिर अगर सतसग किसी जागते पुरुष की सोहबत करोगे तो तुमको क्या मिलेगा ? वह नाम का जो रंग है, उसमें रंग देगा, ऐसा रंगेगा कि दुनिया का फिर कोई रंग नहीं चढ़ेगा। तुम फिर असर दे सकोगे, असर लोगे नहीं। यही फर्क है एक आम आदमी में और करनी वाले आदमी में। काम दोनों एक जैसे करते हैं। एक जैसा काम करते हुए, एक लम्पट हो जाता है, एक आज़ाद रहता है, नेहकर्म हो कर जो कर्म करता है वह आजाद है। जो सकर्म करता है, ख्वाहे नेक करे या बद

करे, दोनों ही ''स्वर्ग नर्क फिर औतार।'' आने जाने का सामान बना रहता है। वह Conscious co-worker है। वह देखता है कोई और ताकत काम कर रही है। याद रखो। किसी महात्मा की निशानी क्या है ?

**नानक हुकमे जे बुझे तां हौमैं कहे न कोय ॥**

जो Conscious co-worker उस परमात्मा का बन जाता है, उसमें हौंमैं (अहं) नहीं रहती। वह कहता है, मैं नही वह कर रहा है। वह देख रहा है कि वह कर रहा है। किसी पूर्ण पुरुष से पूछो, वह कहता है मेरा गुरु कर रहा है। यह कभी नहीं कहा कि मैं करता हूं। वह कर गये। क्योंकि वह देखता है कि वह पावर काम कर रही है। तो फर्मा रहे हैं कि चेत कर प्रीत करो सतसंग में। फिर वह गुरु क्या करेगा ? तुमको नाम में रंग देगा ऐसा रंगेगा कि फिर और कोई रंग उस पर नहीं चढ़ेगा।

**(3) धन सम्पत्ति तेरे काम न आवे छोड़ चलो यह छिन में ।**

कहते हैं, दुनिया के जितने सामान हैं, पहिले तो जिसम का कह दिया ना, फिर जिसम के साथ धन और सम्पत्ति। दुनियाँ में हम लोगों का सबसे बड़ा आदर्श क्या है ? रुपया इकट्ठा करो। Money making या यह कह दो Pecuniary mania हो रहा है। जिसको देखो क्यों भई कितने रुपये इकट्ठे किये, कितने मकान, कितनी जायदाद बनाई ? यही सवाल लोग एक दूसरे से करते हैं। यह नहीं पूछता कोई कि अरे भाई तेरी अन्तर की क्या हालत है?अपने आपे की होश आई है कि नहीं ? समझे । मैं पाकिस्तान में था, मैं रिटायर हुआ ना, तो लोग पूछने लगे क्यों भई कितने रुपये इकट्ठे किये हैं ? यही आम सवाल है ना। मैंने कहा, भई मेरे प्राविडेन्ट फन्ड में थोड़े पैसे हैं। बस। लोग कहने लगे, तुम बड़े बेवकूफ हो। कुछ इकट्ठा नहीं किया। मैंने कहा भई जो बांट कर खायेगा, वह कैसे इकट्ठे करेगा ? सच्ची बात तो यही है ना। कहने लगे, कितनी जायदाद बनाई है ? मैंने कहा कोई मकान नहीं बनाया। कि तुम बेवकूफ हो। मैंने कहा बहुत अच्छा भई। उनकी अकल से बेवकूफ ही थे ना। पाकिस्तान बन गया, यहां आ गये। उन्होंने यहां तक किया कि पेन्शनें भी Commute करा ली उनकी भी ज़मीनें खरीद ली, मकान बनाने लग गये। पाकिस्तान बना, यहां आये। कहने लगे भई तुम बड़े सयाने थे।

तो भई जब चीज़ सामने छिन गई, होश आई कि वाकई अरे भाई पिण्ड भी छिन जायेगा। यह जायदादें कैसे जायेंगी? यह बताओ, तुमने अपना तोशा क्या बनाया। सवाल तो यह है। जो दुनिया के रंग में रंगे हैं मुआफ करना, उनको ऐसे लोग, जो इस तरफ जाने वाले हैं, कहते

हैं, यह भी कोई आदमी है ? सुसायटी के काबिल नहीं है। जो इस रंग में हैं, वह उन पर रहम करते हैं। यह बिचारे हैं, परमात्मा दया करे। तो कहते हैं, यह धन और सम्पत्ति कितनी भी है, ''तेरे काम न आवे, छोड़ चलो इक छिन में।'' जब जिसम से निकलता है, यहां कहां रहता है? मुआफ करना, जब लाचार होता है तो पहिले ही कुन्जियाँ निकाल लेते हैं। पहिले ही झगड़े पड़ जाते हैं, हम क्या करेंगे ? मैंने ऐसे वाकेयात देखे हैं कि पति मर गया, स्त्री ने लातें रख ली पति के जिसम पर कि मैं इसको निकलने नहीं देती, पहिले मेरा फैसला करो। बताओ क्या हशर है दुनिया का ?

घर घर में लड़ाई किस चीज की है ? रुपये और पैसे की ! सवाल तो सदाचारी होना चाहिये भाई। बात कुछ और थी, पति स्त्री को दुरकार रहा है। मैंने देखा कि स्त्री बीमार है, भेज दो मैके घर राजी होगी तो आ जाये। दोनों ही अधोगति में जा रहे हैं। मेरे कहने का मतलब है कि दुनिया पैसे की मतलबी है ज्यादातर। सदाचारी लोग भी हैं मैं उनकी तारीफ करूंगा मगर कमयाब लोग हैं। आम दुनिया की यह हालत है। बड़ा हो गया कोई पूछता नहीं, रोटी से दरमान्दा हो जाता है, बुरी हालत होती है।

जिसमानी तौर से लाचार होता है। घर वाले उसके साथ नौकरों से भी बुरा बर्ताव करते हैं। डियढ़ी में लिटा देते हैं, टूटी हुई खाट दे देते हैं, फटा हुआ झलंगा ऊपर दे देते हैं, हाथ में सोटी दे देते हैं, कि खौं खौं किये चले जाओ और कुत्ते हांकते चले जाओ और पोतों को खिलाते चले जाओ। यह हालत है दुनिया की। जिसने जवानी में इस तरफ तवज्जो दी है वह खुश है, जिसने जवानी में यह काम नहीं किया बड़ी उम्र में कोई कोई कर सकता है। क्या पता है, सेहत ही जवाब दे जाती है, होश हवास ही ठिकाने नहीं रहते। आम हालत तो यही है। जिसने ब्रह्मचर्य की रक्षा की है उनके तो होश हवास बड़ी उम्र में भी कायम हैं मगर आम हालत अधोगति को जा रही है।

तो कहते हैं, धन और सम्पत्ति अरे भाई तेरे काम आने वाले नहीं क्योंकि तू तो आत्मा है ना, जिसम नहीं है। जिसम के छूटते ही सब पराया हो जाता है। '' सब भयो परायो।'' साथ में क्या जायेगा ? तुलसी साहब ने यहां तक कहा है कि अगर सारी दुनिया की लक्ष्मी एकत्र कर लो, तुम्हारी बन जाये, इतने धनाड हो जाओ, हैं चीजें नामुमकिन जैसी, मगर मान लो दो मिनट के लिये हो भी जाये, जहां से सूरज चढ़ता है और जहां जा कर उतरता है, यह सारी जमीन तुम्हारी जायदाद बन जाये कहते हैं कि -

**जो आखर निज मरन है ते कौने आवे काम ।**

यहीं के यहीं रह जायेंगे। जो पाप कर करके कमाया है, वह पाप साथ जायेगा। तो इसका यह नहीं मतलब कि आप कमाओ नहीं, नेक ज़रिये से कमाओ, नेक रस्ते में खर्च करो। वही तुम्हारे काम आने वाले हैं। सतसंग में खर्च करो। गरीबों, नंगो-भूखों, प्यासों को बाँट कर। दुःखी दर्दी के दुःख दूर हों। यह तो हो गया नेक रस्ते में खर्च करना नहीं तो तुलसी साहब क्या कहते हैं कि अगर घर में रुपया बढ़ जाये और बेड़ी में पानी भर जाये तो अकलमन्दी इस बात में है कि दोनों हाथों से बाहर फेंको, नहीं तो डूब मरोगे, और क्या होगा!

तो दसवें गुरु साहब ने यह रिवाज रखा ''वन्ड छकणा'' । बाँट कर खाओ भई। बाँट कर खाओगे तो घर घर में सुख हो जाये। झगड़े घर घर में किस बात के हैं ? एक के पास ज्यादा है, वह दूसरे को नहीं देता। एक भूखा मर रहा है। स्त्री और पुरुषों में यह झगड़ा है। बाल बच्चों में और माता पिता में यह झगड़ा हो रहा है। हर एक जगह यही झगड़ा है। अगर सब बाँट कर खा ले तो झगड़ा क्या है ? सुख हो जायेगा। तो कहते हैं, यह तेरे काम आने वाले नहीं है। इससे नेक रस्ते में खर्च करके फिर किसी तरह तुम इससे फायदा उठा सकते हो। Make the best use of money. इससे फायदा उठाओ मगर फिर भी यह फायदा, क्या ? कि साधुओं, सन्तों, महात्माओं के पास बैठो, अनुभवी पुरुषों की सोहबत संगत करके, Convenience में (धन पास होने से जो सहूलियत मिलती है) या लोगों को ऐसी सहूलियत पहुंचाने में खर्च करो। यह भी नेक रस्ते में खर्च होगा। अगर इसमें नहीं किया तो यहां की यहीं रह जायेगी दौलत। सोने चाँदी को हाथ में मलो तो हाथ काले हो जाते हैं। अरे भई, जिस दिल में दुनिया, सोना और चाँदी बस रही हो, वहां क्या वह सफेद हो जायेंगे? तो कहते हैं, यह जो आदर्श हमने बना रखे हैं ना, जायदाद और रुपया, यह तुम्हारे भई काम आने वाले नहीं। यहीं के यहीं रह जायेंगे। कुछ ऐसा काम करो जो तुम्हारी आत्मा के काम आने वाला हो। यह तो यहीं के यहीं तुमको रखेंगे। इनकी हवस, इनकी लम्पटताई। इनकी Attachment आपको मर कर कहां लायेगी ? वापस फिर यही लायेगी। अगर तुम पिण्ड से ऊपर आना सीख जाओ, आत्म अनुभवी पुरुषों की सोहबत इस राज़ (भेद) को सीख लो और ऊपर God in action power क्या नाम और हुक्म के पहिचानने वाले बन जाओ। उसमें महारस है उसको पा जाओ तो दुनिया की Attachment जिन्दगी में ही कट जायेगी। फिर तुम मर कर वापस क्यों आओगे ? बड़ी मोटी बात। तो स्वामीजी महाराज फर्माते हैं, कि दुनिया में दो ही चीजें आदर्श बन रही हैं या रुपया या सम्पत्ति, जायदादें बनाना। अरे भाई यह तो यहीं के यहीं रह जायेंगे। तेरे काम नहीं आने वाले। यही गुरु अर्जुन ने फरमाया है। किसी महात्मा की बाणी लो, यही कहते हैं -

**भई प्राप्त मानुख देह हुरिया ।**
**गोबिन्द मिलन की यह तेरी बिरिया ।।**

कि मानुष्य जन्म बड़े भग्गों से मिला है। इसका लाभ क्या है अरे भई प्रभु के पाने का यह वक्त है। मनुष्य-जीवन में आकाश तत्व प्रबल है। यह सत और असत का निर्णय कर सकता है। आत्मा को मन-इन्द्रियों से आज़ाद करके प्रभु के साथ जुड़ सकता है, और किसी योनि में नहीं। फिर कहते हैं, क्या कहते हैं, बड़े ज़ोरदार लफ्ज़ों में फ़र्माते हैं -

**अवर काज तेरे किते न काम ।**

यह कहते हैं तेरे काम आने वाले नहीं। वह कहते हैं ''अवर काज तेरे किते न काम।'' जितने तुम काम कर रहे हो भई, वह तुम्हारी आत्मा के काम आने वाले नहीं हैं। कहते हैं, कोई ऐसे काम हैं जो तुम्हारी आत्मा के काम आने वाले हैं ? कहते हैं हाँ !

**मिल साध संगत भज केवल नाम ।**

साधु की संगत अख्त्यार करो। साधु अनुभवी पुरुष का नाम है, भेख का नाम नहीं है, याद रखो। जो तृगुण अतीत अवस्था को पा चुका है, उसका नाम साधु है।

**साध की उपमा तेह गुण ते दूर ।**
और - **साध प्रभु भिन्न भेद न भाई ।**
और - **साध रूप अपना तन धारिया ।**

जो Polarised God (सदेह ब्रह्म) है यह कह दो, उसकी सोहबत करो, अनुभवी पुरुष की सोहबत करो। कहते हैं, उसकी आत्मा तन मन के पिंजरे से आज़ाद हो चुकी है, तुमको आज़ाद करने में मदद कर सकता है। उसकी यह ज़रूरत है, वह यह नहीं कहता कि मैं ही हूं। वह कहता है, प्रभु को लगो, उसके साथ मिलो, मैं सब का दास हूं। मैं सेवा करने आया हूं। जगत का तमाशा देखने आया हूं दसवें गुरु साहब कहते हैं, मेरा चित्त तो नहीं करता था आने को। ''दो ते एक रूप होय गयो।'' कहते हैं, मैं दो में से एक रूप हो गया था। ''चित न भयो हमरो आवन को।'' मेरा चित्त नहीं करता था दुनिया में आने को। मगर, ''ज्यों-त्यों कह के मोहि पठायो।'' कहा, नहीं भई जाना है, जीवों का उद्धार करना है। इसका क्या मतलब है ? अरे भई वह God sent (प्रभु का भेजा हुआ) है। जब उसका (प्रभु का) कोई संगी साथी नहीं यह कहो कि अपनी सत्ता उसमें रख कर भेज देता है। वही परमात्मा ही उस पोल में काम करता है जीवों का उद्धार करता है और क्या। तो फ़र्मा रहे हैं, अरे भई, साधु की संगत तुम्हारे काम आने वाली चीज़ है। और दूसरा काम ''भज केवल नाम।'' नाम को भजो भाई, नाम से ही जीवों का उद्धार हमेशा ही होता रहा है।

**जिन्नी नाम धियाया गये मुसक्कत घाल ।**
**नानक ते मुख उजले केती छुट्टी नाल ॥**

जिन्होंने नाम को धियाया है, उनकी जीवन की मुशक्कत सफल हो गई, उनके अपने मुख मालिक की दरगाह में उजाले हो गये और उनके साथ और कई अनेकों पुरुषों का कल्याण हो गया।

**एक नाम जुग चार उधारै ।**

एक नाम से चारों जुगों में जीवों की कल्याण होती रही, आज ही नहीं। नाम क्या चीज़ है? कई बार सतसंग में ज़िकर आया है कि वह अक्षर नहीं। दो किसम के नाम हैं। एक अक्षरी नाम, एक वह ताकत जिसको यह अक्षरी नाम बोध करा रहे हैं। वह एक है ।

**अपने अपने इष्ट की, सब ही मनावें टेक ।**
**रजब निशाना एक है, तीर अन्दाज अनेक ॥**

जिसको हमने पाना है, वह सबका एक है। समझे ।

**सैकड़ों आशिक हैं, दिलाराम सबका एक है ।**
**मज़हबो मिलता जुदा हैं, काम सबका एक है ॥**

अरे भई, किसी समाज में रहो, हमने प्रभु को पाना है शराब पीने वाले शराब खाने में जाते हैं। किसी समाज के भी हों, शराबखाने में जाना पड़ता है। अरे भई प्रभु के पाने के ख्वाहिशमन्द किसी समाज के हों, वह वहीं जायेंगे जहां प्रभु की शराब मिलेगी, नशा मिलेगा। बस। बात तो यही है। जब दुनिया में मुखतलिफ (विभिन्न) समाजों के भाई शराबखानों में इकठ्ठे गले लग लग कर बैठ सकते हैं तो भई प्रभु के नशे को पाने वाले लोग, किसी समाज में क्यों नहीं हैं। वह गले लगकर क्यों नहीं बैठते। अगर है उनमें लगन तो बैठे जायेंगे। और जितने अनुभवी पुरुष, महात्मा, प्रभु के भक्त कहो, आशिक कहो, हुये हैं, वह सब गले लग लग कर बैठते रहे। जब गुरु अर्जुन साहब ने गुरु ग्रन्थ साहब की बाणी एकत्र की है, श्री आदि ग्रन्थ की, तो उसमें कौन सी कसौटी सामने रखी है ? कोई भी जो अनुभवी पुरुष हुआ है, ख्वाहे वह किसी समाज में हुआ है, वह सबकी वाणी एकत्र कर ली। A banquet hall of spirituality एक जियाफत खाना रूहानियत का कायम कर दिया है। जो भी पीने वाले हैं, आये। तो तंगदिली नहीं। महात्माओं ने तंग दिली पैदा नहीं की। हम लोग तंग दिलियों में, जकड़ों में जा रहे हैं। एक महात्मा की बाणी दूसरी समाज के आदमी नहीं पढ़ते। अरे भाई क्यों ? वह भी जब उसी का ज़िकर कर रहा है तो खुशी से पढ़ो। आपको शौक बढ़ेगा। अपना, जिस महात्मा से तुम्हारा ताल्लुक है, उसकी शान और बढ़ेगी।

मैं आगरे गया था। वहां सत्संग हुये। वहां स्वामी बाग की जो आजकल है कमेटी उन्होंने बना रखी है, उनसे मिले। वह आये पहिले भी आये थे। सतसंग सुने। क्योंकि मुखतलिफ महात्माओं की बाणी Pack कर के पेश किया जाता था, तो कहने लगे कि भई हमें तो यह तरीका सतसंग का बहुत पसन्द आया है। जो एक बाणी को हम सुनते हैं, लोग कहते हैं शायद यही तंग दिली, और किसी ने नहीं कहा। अरे भई सब वही बात कह रहे हैं। बात तो एक है ना, प्रभु को पाना है। हम सबको एक जैसी बीमारी लगी पड़ी है। आत्मा मन के आधीन, मन इन्द्रियों के आधीन, हम जिसम का और जगत का रूप बने बैठे हैं। एक जैसी बीमारी सबको लग रही है। किसी समाज में हो। अब जो इससे आज़ाद करके, इससे ऊपर नाम पावर से जोड़ेगा, वह अनाम में पहुंचाने का ज़रिया है। बस। मोटी बात तो इतनी ही है। हाँ अपराविद्या के लिहाज़ से, अपने रस्मों-रिवाजों में रहो, अपनी-अपनी समाजों में रहो। वह ज़मीन की तैयारी है। मन को खड़ा करने के थोड़े थोड़े साधन दे दिये हैं, मगर पक्का साधन तो अन्तर नाम के लगने से ही हो सकता है, और कोई नहीं। तो यह फ़र्मा रहे हैं। बड़ी खूबसूरती से, क्या? ''धन सुम्पत तेरे काम न आवे छोड़ चलो इक छिन में।'' बस। जिसम से Switch off हुआ और जिसम भी रह गया। और कहां चीज़ें साथ जायेंगी।

**''आगे रैन अंन्धेरी भारी, काज करो कुछ दिन में ।**

कहते हैं कि दिन के बाद रात आती है। अरे भई यह जो आयु है ना हमारी, मनुष्य जीवन अब जागृत समय है। इसके बाद दिन के रात आती है। इस जिन्दगी के बाद अगली जिन्दगी का हमें कुछ पता नहीं कहां जाना है। क्या पता है ? ''आगे रैन अंधेरी भारी काज करो कुछ दिन में।'' जब तक दिन दिन है, तब तक कुछ काम कर लो भई। अपने आपको जान लो। चेत कर प्रीत करो सतसंग में। गुरु फिर रंग दे तोहि नाम अरंग में। यह काम कर लो। यह काम कर लो दिन दिन में, जब तक तुम्हारी ज़िन्दगी है, जब तक तुम जीते हो। क्या पता इसके बाद क्या होगा ? अगर जीते जी जान लोगे तो मर कर भी जाने हुए होंगे। जो जीते जी पढ़ा हुआ है। वह मर कर भी पढ़ा हुआ है। हमारे हजूर फ़र्माते थे जो जीतेजी अनपढ़ है,क्या मरकर पन्डित बन जायेगा? तो जीवन मुक्ति को सब सन्तों ने सामने रखा है। मुख्य आदर्श। मर कर मिलने का क्या एतबार है ?

**मोयां होयां जे मुक्त देवोगे, तो युक्त ना जानूं कोयला ।**

मान लो कि मिलेगी, अव्वल तो एतबार क्या है ? Commonsense की बात है। हम दो रोटियाँ खाते हैं भई, हर एक काम में बड़े सयाने हैं। यहीं आँखों पर पट्टी बान्ध ली है। भई अगर कुछ तुम्हें मिला है, थोड़ा तजरुबा मिल गई, समझो ठीक है। यह नहीं कि किये जाओ,

मरने के बाद मिलेगा। अभी अधिकार नहीं अभी ज़मीन नहीं बनी है, अरे भई यह भी कहां तक? कोई अकलमन्द आदमी तो नहीं इसको Accept करेगा, कौन कर सकता है, हाँ यह बात कामनसेन्स की है कि सब महात्मा अगर सहमत होकर अगर एक ही बात कहते हैं और अगर कोई ऐसा पुरुष मिल जाता है वह कहता है अरे भाई इसका तजरुबा हो सकता है। वह तुमको बिठाकर करा दे, तो फिर उसकी बड़ाई का शक कहां रह जाता है ? वह बड़ाई भी उस मालिक की सत्ता की है जो उस पोल पर बैठी काम कर रही है। उसकी नहीं। वह कहता है, उस मालिक की दया से है। वह यह नहीं कहता कि मैं कर रहा हूँ ।

**नानक दास बुलाया बोले ।**

अपने आप पर नहीं रहते। वह कहते हैं, वह मालिक कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। तो कहते हैं कि दिन दिन में ही कर लो भई। अगर अब नहीं करते तो फिर जैसे होंगे वैसे ही मर जायेंगे ना, जैसे अनपढ़ मरा तो अनपढ़ ही रहोगे या मरकर अनुभव को पा जाओगे ? तो जीतेजी अनुभव को पाने का यत्न करो भई। वह कैसे होगा ? ''प्रीत करो सतसंग में'' किसी जागते पुरुष की सोहबत अख्तियार करो। इसका एक ही ज़रिया है। जो जागे हुए पुरुष की सोहबत करेगा वह जाग उठेगा, जो मन इन्द्रियों के घाट पर सोये पड़ा है, अपने आप को नहीं जाना। प्रभु को नहीं पहिचाना, वह कितना भी आलिम फाज़ल है, सारी दुनियां की डिगरियां उसके पास हो, वह अभी आपको अनुभव नहीं दे सकेगा। वह इल्म दे सकेगा। सवाल तो यह है। इल्म से काम ले लो। इल्म आमिल के गले में फूलों का हार है, मगर इल्म एक Practical मज़मून है, अनुभव का। यह कुछ और चीज़ है वह और है। हो सकता है, एक बड़ा भारी आलिम हो, और अनुभव से बिलकुल खाली हो।

इल्मियत किसको कहते हैं ? जब हमारी तवज्जो Brain (मस्तिष्ट) के सेन्टर से जुड़ती है उसका नतीजा इल्म है। नई-नई तफतीशें हैं ईजादें हैं। जब वही सुरत या Attention कहो All pervading power के साथ, परमात्मा परिपूर्ण, जिसको नाम या शब्द कहा है, उसके साथ लगती है, उसका नाम है रूहानियत, कितना भारी फर्क है ? उपनिषदों ने क्या कहा, ''इन्द्रियां दमन हों, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार करता है।'' अब हम बुद्धि से, विचार से, काम ले रहे हैं। मगर विचार की एक चीज़ को समझने के लिये जरूरत है। जब समझ आ जाये तो फिर इसको भी स्थिर करो और उसको पाने का यत्न करो। तब तो ठंडक मिलेगी। शान्ति मिलेगी। नहीं तो सारी उम्र तफसीरों में ही लगे रहे, फैलाव में रहे, बुद्धि के फैलाव में, तुम इससे काम ले लो, फिर इसको स्थिर करो। तभी काम बनेगा। सब महात्मा यही कह रहे हैं।

**(5) यह देही फिर हाथ ना आवे फिरो चौरासी बन में।**

कहते हैं मनुष्य जीवन अगर एक बार हाथों से निकल गया फिर हाथ आना मुश्किल है।

**पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे एहला जन्म गंवाया ।।**

जन्म बरबाद चला जाता है। फजूल चला गया। तो मनुष्य जीवन में ही यह काम कर लो। अगर इसमें नहीं किया, तो भई पछताना पड़ेगा। पैदा तो रोता हुआ आता ही है। जाता हुआ भी रोता हुआ चला जायेगा। धिड़कता मर जायेगा, और क्या होगा। अगर जीते यह काम कर लें, हंसते-हंसते जाओगे।

**जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द।**
**मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द ।।**

तो आगे फरमाते हैं ।

**(6) गुरु सेवा कर गुरु रिझाओ आओ तुम इस ढंग में**

कहते हैं, ज़िन्दगी का कौन सा ढंग अख्त्यार करो ? किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठो। उसकी सेवा करो। सेवा करके, उसको खुश करो, उसकी खुशी हासिल करो। यह ढंग जिन्दगी का अख्त्यार करो। तुम अनुभव को पा जाओगे। गुरु, अनुभवी पुरुष का नाम है। उसकी सेवा में बैठो। जैसा वह कहेगा वैसा जीवन बनाओ।

**बीस बिसवे गुरु का मत माने ।**
**तो परमेसर की गत जाने ।।**

जितने भी आज दिन तक ऋषि मुनि महात्मा हुये हैं उनकी बड़ाई का राज़ इसी चीज़ में छुपा पड़ा है। गुरु सेवा, गुरु भक्ति। गुरु के चरणों में बैठकर उसके हुक्म की बजावरी। किसी महात्मा का जीवन लो, किसी महात्मा का नाम तारीख (इतिहास) बतलाती है और किसी का नहीं बतलाती, मगर असूल तो एक हैं ना !

**धुर खसमें का हुक्म पिया बिन सतगुरु चेतया न जाये ।।**

उस मालिक का धुर से यह हुक्म असूल बन गया है कि जब तक कोई सत्स्वरूप हस्ती न मिले, मालिक का Contact (सम्पर्क) नहीं हो सकता ।

**बिन गुरु पूरे कोई न पावे लख कोटी जे कर्म कमावे ।।**

लाखों करोड़ों कर्म कर ले तो क्या जहां तक याद है।

**जो जियों विरंच शंकर सम होये ।**

शंकर जैसे भी बुद्धिमान हो जाओ तो भी नहीं मिलता ।

**तीन लोक के नायका गुरु आगे आधीन ।**

त्रिलोकीनाथ होते हुये भी गुरु के आगे सिर नीचा था। किसलिये ? इसी अनुभव के खातिर। जब इतने इतने महापुरुष औतार भी इस मर्यादा में रहे, अरे भई हम उनसे बड़े थोड़े हैं। कोई काम सीखता हो, बाहिर का काम भी सीखना हो, तो किसी न किसी के पास जो माहिर हो, उसके चरणों में बैठना होगा। उसके कहे के मुताबिक जीवन बनाओ, वह और खुशी से पढ़ाता है और अन्तर के रस्ते में जहां इन्द्रियों के घाट से ऊपर का सिलसिला है, अरे भई वहां बगैर किसी Guide(पथ प्रदर्शक) के कहो, आमिल के कहो, कैसे तुम जा सकते हो ? तो बड़ी Commonsene का सवाल है भाई । हां हम लोग डर चुके हैं गुरुडम से मुश्किल तो यह है। दूध का जला हुआ छाछ से भी डरता है। बात तो यह है। मगर सच्चे महात्मा के बगैर कल्याण नहीं है। तो क्या कहते हैं, गुरु सेवा में रहो। जो वह कहे वैसा जीवन बनाओ। उसकी हिदायत के मुताबिक काम करो। और उसकी खुशी हासिल करो। उस्ताद किस शिष्य पर खुश होगा ? जो उसका हुक्म मानेगा। जो वह चाहता है, वैसा जीवन बनाये। उस पर खुश होगा ? जो उसका हुक्म मानेगा। जो वह चाहता है, वैसा जीवन बनाये। उस पर खुश होगा। स्वामी दयानन्दजी महाराज और सब महात्मा जो भी आये हैं, सबके लिए, हमारे दिल में इज्जत है। उनके जीवन में आता है कि वह स्वामी बिरजानन्दजी महाराज के पास गये। संस्कृत पढ़नी थी, वेदों के वह माहिर थे। तो इनकी बगल में कुछ किताबें थी। यह तारीख बतलाती है। मुझे देखने का तो सौभाग्य तो नहीं हुआ, मगर किताब में जो पढ़ा वही मैं अर्ज कर रहा हूं उन्होंने कहा यह किताबें दयानन्द पानी में फेंक आओ। आपको पता है स्वामी दयानन्दजी ने क्या किया? कोई चूँ चरां की है ? नहीं। चुपचाप जाकर फेंक आये। इसी का नाम गुरु सेवा है। और पढ़ने का इतफाक हुआ है कि कई बार स्वामी बिरजानन्दजी उनको सोटियों से मारा भी करते थे। उस्ताद मारता है, कोई बड़ी बात नहीं। तो उन्होंने क्या करना उनके जिसम को दबाना कि महाराज मेरा जिसम सख्त है, आपको बड़ी तकलीफ हुई होगी। इसका नाम है गुरु सेवा। यह है गुरुभक्ति। वही पण्डित दयानन्द बने, वही महर्षि दयानन्द बने। तो किसी महान् आत्मा कहो, की बड़ाई गुरु के चरणों में ही हुई है। उसको गुरु कहो, उस्ताद कहो, जो भी-

**बिस बिस्वे गुरु का मत माने, तो परमेसर की गत जाने ।**

सवाल तो यह है। तो कहते हैं, उसको खुश करो। खुश करने से क्या होगा ? खुशी कुछ और चीज है। लाखों करोड़ों रुपयों पर नहीं मिलती। समझे। खुश हो जाये तो एक मामूली सी बात पर खुश हो जाये।

**आं बुते अयार दर बर खुद बखुद मी आयद ।**
**न बजारी न बजोरे न बजर मी आयाद ॥**

वह अय्यार बुत अगर आ जाये खुशी से, तो अपने आप आ जाये। कोई चीज़ उसे भा जाये, अदा ही है ना, कोई चीज पसन्द आ जाये, अगर न हो, ख्वाहे रुपयों से उसको खरीदना चाहो, वह नहीं खरीदा जायेगा। ज़ारियों से नहीं आयेगा। जरों से भी नहीं आयेगा। न ज़ोरों से काबू में आयेगा। गुरु नानक साहब थे। लालो तरखान के यहां गये। मलिक भागो वहां का हाकिम था। उन्होंने यज्ञ किया। उसने बुलाया कि आओ भई, सब महात्मा आओ। मगर गुरु नानक साहब नहीं गये। लालो तरखान के यहां रहे। हाकिम को पता लगा कि गुरु नानक साहब आये तो हैं, मगर मेरे यहां नहीं आये, यज्ञ में शामिल नहीं हुये। बुला भेजा। हाकिम थे। चले गये। अरे भाई नानक, तुम आये थे, यहां क्यों नहीं आये ? कहने लगे मैं आया, लालो तरखान के यहां ठहरा था। यहां माल पुड़े था, यह था, वह था। यज्ञ था बड़ा आलीशान। कहने लगे, हां था तो सही, मगर इसमें खून निचुड़ा था। साफ गो होते हैं महात्मा। अटकते नहीं, कहीं जब कहने पर आते हैं तो। ख्वाहे टूटे ख्वाहे रहे, साफ कहेंगे। कहने लगे कि लालो तरखान के क्या चीज़ थी ? कहते हैं वहां सतअनाजे की रोटी थी। एक अनाज भी नसीब नहीं, इतना गरीब था। कहते हैं वह कैसे बेहतर है ? कहते हैं, मैं अभी बतलाता हूं। मंगाई वह भी रोटी एक हाथ में पकड़ ली, फिर उनको कहा तुम अपने लाओ माल पुड़े वगैरा, दूसरे हाथ में पकड़ लिये। जब निचोड़ा तो लालो तरखान की रोटी से दूध निकला उनकी रोटी से खून के कतरे निकले। अरे भाई जितनी कमाई की है, यह किस काम की ? लोगों का खून निचुड़ा पड़ा है। तो लाधड़क होते है। वहां हकूमत को भी नहीं मानने वाले, समझे, जब सच पर आ गये।

रुपये से भी नहीं खरीदे जा सकते। कबीर साहब थे। धनी धर्मदास के गये। अमीर थे।शायद चौदह करोड़ के कहते हैं मालिक थे। वह बड़े अमीर थे। यह गए वह खाना खा रहे थे। आवाज़ दी घरवाली ने कहा ठहर जाओ। ठहर गये। थोड़ी देर के बाद फिर आवाज़ दे दी। अरे भई तुम बार-बार आवाज देते हो, तुम पापी हो। कहने लगे मैं पापी कहां, पापी तो तुम हो। देखो लकड़ियों में कीड़े जल रहे हैं। इतना कहा और चले गए। देखा तो सचमुच लकड़ियों में कीड़े जल रहे थे। धर्मदास ने कहा देख बीबी तूने बड़ा जुल्म किया है। एक महापुरुष आये थे। पूर्ण पुरुष थे। जानी जान थे। तूने उनका निरादर कर दिया है। कहने लगी, अरे भाई क्या है, गुड़ पर कई मक्खियां इकट्ठी हो जायेंगी। हम लोगों का यह ख्वाब ख्याल है। क्या किया, यज्ञ

किया। बड़े-बड़े साधु आये, मगर वह साधु न आया। वहां भी किया, हर एक तीर्थ स्थान पर बड़े-बड़े यज्ञ किये। सब आये, मगर वह साधु न आया। आखिर हार कर, कहते हैं चौदह करोड़ का चौदह करोड़ खर्च कर दिया। सब कुछ हुआ मगर वह साधु न मिला। आखिर हार कर दरिया के किनारे गये, डूब मरें अब, अब जिन्दगी किस काम की, जिसकी तलाश थी वह नहीं मिला, बेजर (निर्धन) भी हो गये। और दूसरों की नज़र से भी गिर गये। जिसके पास पैसा न रहे तो दुनिया क्या कहती है! जब डूबने लगे दरिया के किनारे जब कपड़े उतारे तो सामने आ खड़े हुये। कहने लगा (धर्मदास) महाराज, मैं तो आपकी तलाश में था, आप नहीं आये। कि हां भई मैं नहीं आया। अगर उस वक्त आ जाता तो तुम यह जानते कि यह पैसों के भूखे हैं।

अनुभवी पुरुष को पैसे से खरीदा नहीं जायेगा। सेवा करके उसको रिझाओ, सेवा क्या है। उसके हुक्म की बजावरी करो। नेक पाक रहो, सदाचारी बनो, भजन सिमरन करो, छोड़ो पिण्ड को, उनकी हिदायत के मुताबिक, इसको सबसे आला आदर्श जीवन का बनाओ। वह अपने आप खुश हो जायेगा। जो लड़का थोड़ा शौक भी बतलाये, उस्ताद उस पर खुशी करता है, आ भई मेरे घर भी आ जाना। मैं जब पढ़ा करता था, वह देखते थे शौक था। हैडमास्टर वगैरा थे। वह कहते थे, हमारे घर आ जाया करना भई। चले जाना, उनकी हर एक तरह से सेवा करनी। छोटी उम्र में जब से पांचवीं या तीसरी में पढ़ा करता था, उस वक्त भी मास्टर बड़े खुश होते थे। कहते कि घर आ जाना। बहुत अच्छा जाना। उनके पानी भी भर लाना। बहुत अच्छा जाना। भई उस्ताद की सेवा करनी और वह भी बड़े दिल से पढ़ाया करते थे।

पीछे दिनों मुझे याद है, लाहौर का वाकिया है। मैं बीमार था। सख्त बुखार था। एक उस्ताद मेरा रह गया पढ़ाने वालों में से। वह कहीं बीस मील पर आये तो उनको पता लगा कि मैं वहां हूं। वहां आये। मैं बीमार था उठ न सका, मगर फिर भी पांव छूये। सिरहाने बैठ मेरा सिर अपनी गोद में रख लिया कि मैं तुम पर बड़ा खुश हूं। तूने बहुत अच्छा काम किया है। हकीकत की तरफ तुम गये हो, हमारी सब पढ़ाई का फल मिल गया। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि उस्ताद खुश होता है जो शिष्य आज्ञाकारी हो। अगर शिष्य आज्ञाकारी ही न हो, फिर क्या बनेगा ?

If you love me keep my commandments

अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरे हुक्म की बजावरी करो।

Let my words abide in you and you abide in me.

कहते हैं कि मेरे वचन तुम्हारे हृदय में बसें और तुम मेरे अन्तर बसो। यह कैसे हो सकता है ?

**रखो किसी को दिल में, बसो किसी के दिल में ।**

किसी को अपने दिल में धारण कर लो, बे अख्त्यार तुम उसके हृदय में बस जाओगे।

You shall have everything you ask.

जो मांगोगे तुमको मिलेगा। तो गुरु सेवा करके गुरु को रिझाओ भई। यही एक राज कामयाबी का है। हमेशा से रहा है और रहेगा। वह तुम्हारे ज़र (धन) का भूखा नहीं याद रखो, वह तुम्हारी जायदादों का भूखा नहीं याद रखो, वह तुम्हारी हकूमत से डरता नहीं याद रखो उसको तो भाई जो उसके कहे मुताबिक उसका प्यार से पालन करेगा, उसी पर वह खुश होता है।

**यक निगाहे जां फज़ायश, बस बवद दरकारे मा ।**

भाई नन्दलाल साहब कहते हैं, उसकी एक जान के उभारने वाली नज़र कहते हैं हमारे लिये काफी है। तो खुशी की नज़र बड़ी भारी चीज़ है भई। तो उसकी खुशी हासिल करो।

**गुरु बिन तेरा और न कोई, धार बचन यह मन में।**

कहते हैं, दिल में पक्का विश्वास यह जान लो कि सिवाय अनुभवी पुरुष के तुम्हारा सच्चा हितकारी नहीं। और है भी कहाँ ? दुनिया के लोग बड़े सदाचारी हों तो भी हद अन्त समय तक। वह गुरु अन्त समय जब आता है तो सामने आ खड़ा होता है। जब दुनिया जवाब दे जाती है तो वह सामने आ खड़ा होता है।

**अन्त खलोया आये जे सतगुरु आगे घालिया ।**

जिन्होंने सदगुरु के आगे चलना घाली है, वह अन्त समय सामने आ खड़ा होता है। चल भई मैं तेरे साथ हूं दुनियां जवाब दे गई, ऐसी हस्ती सामने आ खड़ी हुई, बताओ कितनी खुशी होगी ? हमारे हज़ूर फ़ुर्माते थे, कि मरते समय इतनी खुशी होती है मरने वाले को, जिसको गुरु मिला है, उसकी आज्ञा में रहकर उसने अपना जीवन बनाया है कि अपनी शादी की इतनी खुशी नहीं होती। मरते दोनों ही इन्सान हैं। एक तो घिड़क-घिड़क कर मरते हैं। एक उस अपने माशूक कहो, उस मालिक की गोद में आराम से सो जाते हैं। अगर किसी ने इस बात का निर्णय करना हो तो जिसको उपदेश मिला है, उसने थोड़ा बहुत कमाई की है, उसके मरते समय जाओ। वह कितनी खुशी से जाता है। वह क्या कहता है ? वह गवाही देता है कि हां, मेरा गुरु मेरे सामने खड़ा है। नाम की ध्वनि है, नाम का प्रकाश है। कोई तकलीफ नहीं, सांस ऊंचा नीचा भी नहीं आता। वह तो सो जाता है उसकी गोद में। यही सब फकीर कहते हैं, कि वह जलीलोखार होकर मरते हैं, जिन को ऐसे अनुभवी महापुरुष से वास्ता नहीं मिला है,

उसके हुक्म के मुताबिक रोज़ पिंड से ऊपर आना जाना सीखा है, नाम के महारस को पाया है, वह माशूक की गोद में सो जाते हैं। मिसाल दी है। तो मौत में बड़ा फर्क है। इसीलिये कबीर साहब ने कहा है -

**जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।**
**मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द ॥**

जिस मरने से सारा जहान मौत से भयभीत होता है,क्या पढ़ा लिखा, क्या अनपढ़, अमीर गरीब, हाकिम मैहकूम सब कोई। कहते हैं उस मौत का नाम सुनने से मेरे दिल में खुशी होती है, क्योंकि जिस्म के टूट जाने ही से मालिक में हमेशा के लिये वासिल (लीन) हो जाता है। इसलिये तो बड़ा भारी फर्क है, दो पुरुषों के दर्मियान, एक ऐसा पुरुष जो मन इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, दुनियां के रसों विकारों में लम्पट हो रहा है, उसको कोई जागता पुरुष नहीं मिला Eat drink and be merry में रहा, खाओ पीयो और मजे करो, इससे परे का कुछ पता नहीं। आखिर जिस्म तो छोड़ना है। Ignorance of law is no excuse जिस्म छोड़ना पड़ेगा, अगर नहीं मालूम तो भी छोड़ना पड़ेगा, अगर मालूम है तो भी छोड़ना पड़ेगा। अक्लमन्दी किस बात की है कि -

**दे लम्मी नदर निहारिये ।**

Farsight से काम ले Farsight से काम लेकर उसके लिये तैयार हो। मौत कोई Bug-bear नहीं, हव्वा नहीं है। एक तबदीली का नाम है। पिण्ड को छोड़ना है एक दिन। अगर जीते किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठ कर इसको छोड़ जायें ।

**गुरुमुख आवे जाये निसंक ।**

तो बताओ मौत का खौफ कहां रह गया ? बात तो यह है ।

**जगत जाल में फंसो ना भाई निसदिन रहो भजन में ।**

कहते हैं, जगत के जाल में मत फंसो भाई। जगत का जाल कौन सा है ? जो हमको फंसाने वाला है वह इन्द्रियों का जाल है। इन्द्रियों के ज़रिये जगत में फंसते हैं ना। इन्द्रियों से अतीत होकर नाम मिलता है। गुरु का उपदेश कहां से शुरु होता है ? छोड़ों पिण्ड और चलो ऊपर। Where the worlds philosophies end there the religion starts जहां दुनिया के फिलसफे खत्म होते हैं, वहां से सच्चा परमार्थ शुरू होता है। तो वह कहता है, पिण्ड से ऊपर चलो। कहते हैं, वह क्या कहता है ? अरे भाई बाहर से हटो। चौबीस घन्टे हैं। कुछ अपना

काम भी कर लो। वह यह नहीं कहते कि यह जिसम को न पालो, बाल बच्चों को न पालो, और काम न करो, वह कहते हैं, इस जिसम को भी पालो। किसलिये ?

**घट बसे चरनाबिन्द रसना जपे गुपाल ।**
**नानक तिस ही कारणे इस देही को पाल ॥**

तुम्हारे घट में प्रभु बसे, प्रगट हो, ज़बान से उसके गुणानुवाद गा सको। इसलिये इस देह को पालो। बस। Body is the temple of God इसकी रक्षा करो। इसकी सफाई रखो। बाहर मन्दिरों की हम कितनी सफाई रखते हैं। अरे भई यही मन्दिर है, जिसमें मालिक बस रहा है। वह बाहर तो मन्दिर बनाया था एक नमूना, अगर वहां की सफाई और देखभाल करते हो, इसकी भी करो भई, यह सच्चा हरि मन्दिर है। यह शरीर हरि मन्दिर है जिसमें सच्चे की ज्योति है, यह भी कहते हैं। इसके ताल्लुकात से, जो देना-लेना है, सबके अन्तर परमात्मा है। सब आत्मा देहधारी है। सबसे प्यार करो। सबको पांव पर खड़ा करने की करो, धरों के लिहाज़ से, सामाजिक लिहाज़ से, हर एक पहलू के लिहाज़ से। तुम बुद्धि रखते हो, बुद्धि के पहिलवान बनो, Intellectual पहिलवान बनो। और साथ साथ तुम आत्मा भी रखते हो, आत्मा के भी पहिलवान बनो। देखिये इस जिसम में,

**इल्लते जुमला इल्महा ईनस्तो ईं**

सारे इल्मों की इल्लतगाई क्या है ताकि तू जाने कि मैं कौन हूं ।

**कीमते हर काला मे दानी कि चीस्त ।**
**कीमते खुदरा नदानी इबलहीस्त ॥**

हर एक चीज़ की तुम कीमत जानते हो, उसमें तरक्की की है, जिसमानी तौर पर भी और बुद्धि के लिहाज़ से भी। मगर अगर तुमने अपने आपके मुतल्लिक, आत्मा के मुतल्लिक कुछ नहीं जाना, जिसके आधार पर यह दोनों चीजें चल रही है कहते हैं कि तुम बेवकूफ हो। समझे, यही और और महात्माओं ने कहा है। What does it profit a man if he gains possessions of whole world and loses one's own soul ? क्या हुआ, सारी दुनियां के मालिक बन गये, बड़े आलिम फाज़िल बन गये, अगर अपने आपको नहीं जाना तो दोनों ही अधूरे रह गये।

योरोप में साइन्सदानों की एक कॉन्फ्रेंस हुई थी, पिछले दिनों। उसमें उनके जो प्रेज़ीडेंन्ट थे, वह अपने भाषण में कहते हैं, कि हमने कुदरत की ताकतों पर कब्जा पाया है, पेशतर

इसके कि हम अपने आपको जानते, इसलिये यह तफ्तीश (खोज) सारी ही दुनिया को दुख देने का कारण बन रही है। अगर हम अपने आपको पहिले जान लेते, पीछे यह तफतीशें करते, तो यही चीजें हमारे सुख के लिये बरती जाती। तो अपने आपको जानना, यह पहिला कदम है।

**खुद शनासी ही खुदा शनासी है।**

अपने आपको जानो। सब महात्मा यही कहते हैं। उपनिषद यही कहते हैं, अपने आपको जानो। क्राईस्ट Know thyself कहता है, गुरु नानक साहब यही बार-बार पुकार कर कहते रहे -

**कहो नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई।**

जब तक हम अपने आपको चीन्हते नहीं Analyse करके, क्या, अपने आपका अनुभव नहीं करते, तब तक वह भ्रम जो बन रहा है, मिट नहीं सकता। यही स्वामीजी महाराज ने फर्माया है, जिनकी बाणी अब आपके सामने आ रही है।

**चेतन रूप बिचारो अपना।**

अपने चेतन रूप को बिचारो भई। जिसने अपने चेतन रूप को बिचार लिया, क्या, अनुभव कर लिया, अरे भई हर एक चीज़ उसको असल रंग में नज़र आने लग जायेगी। प्रभु का भी अनुभव होगा, क्योंकि आत्मा ने ही प्रभु का अनुभव करना है ना। तो बड़ी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं। क्योंकि जगत के जाल में तुम मत फंसो, काम तो कर लो।

**ब्रह्म ज्ञानी को नाहीं धन्धा। ब्रह्म ज्ञानी लै धावत बन्दा॥**

महात्माओं की बाणियों को देखो। वह कहते हैं, धन्धों में मत फंसो। वह यह नहीं कहते कि काम न करो। इसमें जो Attachment है ना, चेष्टा, उसको छोड़ो। काम तो मुआफ करना, अनुभवी पुरुष मामूली इंसान से दस गुणा, बीस गुणा, ज्यादा काम करता है। मगर वह Unattached (अलिप्त) है। उसको धन्धा नहीं, उसमें जो धन्धा लेकर करते हैं तो सिर थक जाता है। मन में हाय-हाय करने लगते हैं। अगर चौथा हिस्सा भी काम करते हैं तो घबराते हैं। काम तो करो, मगर उसमें Attachment में मत जाओ। मन को बाँध कर रखो। जब चाहो Direct जिस तरफ करो। स्वीच तुम्हारे हाथ में है। इसको कभी इधर लगा दो कभी उधर लगा दो, तब तो ठीक, नहीं तो यह तुम्हें खेंचे फिरता है।

**साध गुरु का कहना मानो रहो उदास जगत में।**

कहते हैं साधु, साध पुरुष का कहना मानो।

**साध प्रभु भिन्न भेद न भाई ।**

अनुभवी पुरुष का कहना मानो भई, ''साध गुरु का कहना मानो, रहो उदास जगत में।'' दुनियाँ में रहो, मगर दुनियाँ के बन्दे न बनो इससे उदास रहो। आखिर जाना है भई। दुनियाँ में रहकर जिसको मौत याद है, जाना याद है, वह दुनियाँ के हरेक काम को करता हुआ भी इससे अतीत है। अनुभवी पुरुष आपको यही कहता है, यह दुनियाँ हमेशा रहने की जगह नहीं। यह कौमें तुम्हारी नहीं, यह मुल्क तुम्हारे मुल्क नहीं। आखिर एक दिन, इसका ताल्लुक जिसम से है, यह छोड़ जाना है।

**दिला गाफिल न हो एक दम, कि दुनिया छोड़ जाना है ।**

आखिर जाना है भई। कौन रहा, और कौन रह सकता है ? यह एक बात याद रख लो, हमारे जीवन का नक्शा पलट जायेगा, और जितने ऐश्वर्य के सामान हैं, सब रफा हो जायेंगे, Right use तो रहेगा उनका, ठीक इस्तेमाल, जो दुनियाँ में लम्पलाई विषय विकारों की जो ज़हर चढ़ती है, उससे बच जाओगे। शास्त्र मर्यादा के मुताबिक अपना जीवन बनाओ। जैसे ऋषियों मुनियों ने, महापुरुषों ने, आपके लिये सिर्फ जीवन का एक नियम बनाया है, कहो, उसके मुताबिक जीवन बसर कर लो।

**यह लोक सुखीये परलोक सुहेले ।**

दोनों हाथ लड्डू रहें। यहां भी और मरकर भी। अगर ऐसा नहीं किया तो यहां भी रोते रहे मर कर भी रोते चले गये। आगे तो रोना है ही। तो इसलिये क्या कहते हैं, कि साध गुरु का कहना मानो भई, कि यह हमेशा रहने की जगह नहीं। यही स्वामीजी महाराज ने फुर्माया है और जगह भी कि यह देश तुम्हारा देश नहीं।

**पराये देश क्यों रहना ।**

अपना काज करो, पराये काजों में क्यों फंस रहे हो। फंस रहे हो, लफ्ज़ बरता है। फंसो नहीं,काम तो करो। पर उपकार के लिये करो। मगर उसमें फंसो नहीं। उसमें जो धन्धा है, उसको छोड़ दो। वह सिवाय नाम की कमाई के वह धन्धा, अन्तर से Attachment नहीं टूटेगी नाम तुम्हारे अन्तर है । इन्द्रियों के घाट से ऊपर है। उसका ताल्लुक मिलेगा जब आप किसी अनुभवी पुरुष के पास बैठोगे। वह आपको जोड़ देगा। बात तो यह है। उसकी कमाई करने से हरेक काम में बरकत पड़ती है, जिसमानी भी Intellectual भी, हर एक में, क्योंकि सुरत का कन्ट्रोल आ गया ना। ''सुरत का मारग लखवावें।'' जिधर इसको डायरेक्ट करोगे उसी में कामयाबी है। जिसम में लगाओगे पहिलवान बन जाओगे। बुद्धि के साथ सुरत को लगाओगे तो बुद्धि के पहलवान बनोगे। अगर उसको परमात्मा परिपूर्ण से लगाओगे तो रूहानी पहिलवान बन जाओगे। बात तो इतनी है।

जब बुल्लेशाह, शाह इनायत के पास गये हैं, वहां यही सवाल किया कि महाराज, परमात्मा कैसे मिलता है ? तो कहने लगे कि ''साईं दा की पावणां इथरों पटणां ते उथर लावणां।'' बात तो इतनी है। तवज्जो का हटाना है भई। और कुछ नहीं भई। जहां तुम हो, मुबारक हो। गृहस्त आश्रम वाले गृहस्त आश्रम में रहें। घर में स्त्री और पति, प्यार और प्रेम से रहें, दोनों की गाड़ी चले। किस तरफ ? प्रभु के पाने की तरफ। दुनियां की मर्यादा, शास्त्र मर्यादा के मुताबिक व्यतीत करते हुये, सदा के सुहाग के पाने का भी यतन करें। दुनियां का सुहाग दस साल, सौ साल, दो सौ साल, हज़ार साल, आखिर इसे खत्म होना है। सदा का सुहाग आत्मा का परमात्मा के मिलाप से है। उसको हासिल कर लो, जीवन यात्रा भी सफल, काम भी बन जायेगा। सन्त महात्मा यह कभी नहीं कहते कि तुम भई सब तरफ से हट-हटा कर, छोड़ो घर-बार, घरों को उजाड़ो और जाओ साधुओं के पास। ना भई। वह यह नहीं कहते, वह कहते हैं, गृहस्त में रहो -

**पूरा सतगुरु भेटिये पूरी होवे जुगत**
**हसंदियां पहिनदियां, खवंदियां बिचे होवें मुकत ।**

वह आपको घरों से नहीं निकालते। रहो भई घरों में, वहां रह कर आदर्श जीवन बसर करो। जो गृहस्त आश्रम का धर्म है,जो शस्त्र मर्यादा बतलाती है, ऐसा गृहस्त आश्रम नहीं जो कि हमने आज विषय विकारों की मशीन समझ रखा है। इसका यह मतलब नहीं। हमने गलत समझा है। समझे। अगर ऐसा करोगे यहां भी सुखी और मर कर भी सुखी। तो कहते हैं, साधु की संगत में रहो, जाना याद रखो। बस फिर कोई डर नहीं। जिसको मौत भूल गई, जाना भूल गया, सारे काम बिगड़ जायेंगे।

**जिन्नी चलुण जानिया सो क्यों करें विथाह ।**

वह इतने झूठ फरेब दगाबाजी, रियाकारी, कपट यह क्यों बखेड़े पैदा करेगा ! किस बात के लिये ! आखिर छोड़ जाना है।

**छल बल छोड़ो और चतुराई क्यों तुम पड़ो कुगत में ।**

अब देखो, कितने ज़ोरदार लफ्ज़ों में ताकीद कर रहे हैं। हम लोग, आम दुनियां क्या करती है ! कहते हैं छल बल को छोड़ो, ऊपर से और अन्तर से और ऐसा काम नहीं करो। और फिर ऐसा काम करके उसको चतुराई से छुपाना चाहते हो ! यह दोनों चीज़ें मन्जूर नहीं। यह कुगती है, इसमें मत फंसो। अब जो सचमुच अन्तर परमात्मा से Contact नहीं है। मुआफ करना लोगों को धोखा दे रहे हैं, छल बल कर रहा है। और हजारों बातों से उसको सिद्ध करना चाहता है, चतुराई से बताओ उसकी क्या गति होगी ! उससे खबरदार कर रहे हैं। ऐसा मत

करो भई। भाई भाई के साथ, दोस्त दोस्त के साथ छल बल न करो। छल बल हम करते हैं ऊपर से कुछ और अन्तर में कुछ और होता है। जब कर चुकते हैं तो उसको फिर छुपाना चाहते हैं। नतीजा क्या है। वह परमात्मा जो घट में बैठा है, कहता है देखो मुझ ही को धोखा दे रहा है। वह और दूर हो जाता है। और उसकी अन्तर नजर के आगे एक परदा मोटा पड़ जाता है वह देखने के काबिल नहीं रहता। दो चीजों को छोड़ो, छल बल और चतुराई को छोड़ो। काम बन जायेगा।

हमारे हजूर एक महात्मा का ज़िक्र किया करते थे एक महात्मा था, कमाई वाला। रात को उनके यहां एक घोड़ी बन्धी हुई थी। वह महापुरुष सुबह तीन चार बजे उठते थे। प्रभु का भजन सिमरन करने लगे। अपना-अपना काम था। एक चोर उनके यहां आया घोड़ी लेने को। घोड़ी बन्धी हुई थी। आगे से खोला तो पीछे बन्ध गई। पीछे खोले तो आगे बन्ध जाये। सारी रात इसी में लगा रहा। मगर घोड़ी न खुली। महात्मा तीन चार बजे उठे देखा कोई आदमी घोड़ी के पास खड़ा है। आवाज दी अरे तुम कौन हो। छल बल नहीं किया। महाराज मैं चोर हूं। क्या कर रहे हो ! चतुराई नहीं की छुपाया नहीं। जी मैं घोड़ी को ले जाना चाहता हूं, आगे से खोलता हूं तो पीछे बन्ध जाती है। बना कुछ भी नहीं। अच्छा भई यही घोड़ी तुमको दे देंगे। यही दो चीजे पसन्द आ गई। सुबह उनके यहां ऐसे लोग आए थे जिनके गाँव में जो कुतब थे ना, जो साहब महात्माओं की बाणियों द्वारा प्रभु की तरफ याद दिलाते थे वह मर गया था। तो वह लोग आए थे कि हमें कोई ऐसा और साधु दे दो जो हमें प्रभु की याद कराए वह देख रहे थे कि भई इनमें जो बैठे हैं, इनमें तो कोई नहीं, हम ही जैसे सब बैठे हैं, किनको देंगे। वही चोर बैठा था। कहने लगे, अरे भई तुम ही चले जाओ वहां ।

इसी घोड़ी पर सवार हो कर वहां चले जाओ। पसन्द आये तो यह अदा आ जाये। साफगोई हमेशा सन्तों को पसन्द रही है। गुरु को भी पसन्द रही हैं। पाप करो, जा कर कहो कि किया है। उसका तो कोई इलाज हो सकता है। करते हो, और फिर छुपाते हो। हमारे हजूर फमर्ति थे, दाना निकल आया, पाक पड़ गई, बोलता नहीं। वह खौलेगी, फूटेगा अखर। वह (गुरु) परदापोश है। आखर वह मुंह से फूटेगा, ओहो मेरे से यह गलती हुई है। तो दो बातें नहीं करो। भई इस तरफ जाने का रस्ता केवल किन का है ? जो दिल और जबान से एक हों, जिनमें चतुराई नहीं, साफगोई और साफदिली है। वही महात्मा को भी भाते हैं। वह प्रभु को भी भा जाते हैं। हाफिज़ साहब ने कहा कि इस तरफ जाने के लिये।

**ईं कारे यकरंगाँ बवद**

यक रंगों का काम है। यह नहीं कि ऊपर से और अन्तर से और। स्वामीजी महाराज ताकीद कर रहे हैं कि भाई छल बल को छोड़ो, ऊपर से और अन्तर से और न बनो। समझे। और फिर छुपाने का यत्तन न करो चतुराई से। काम बन जायेगा। चोर ने कहा कि मैं चोर हूं। अपनी चतुराई से उसने छुपाया नहीं कि महाराज में इधर से पेशाब करने आया था या पाखाना फिरने आया था। यह नहीं कहा। कहा महाराज मैं घोड़ी खोल रहा था, मगर खुली नहीं। साफ़गोई रखो, तुम्हारा इलाज हो सकता है। जो छुपाता है, उसका अभी दूर है।

**हनोज दिल्ली दूरअस्त ।**

पापी कौन नहीं, मुआफ करना। हर एक इन्सान जो मन-इन्द्रियों के घाट पर बैठा है वह पापी है। मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाने के लिये भी तुम को भई साफदिली साफगोई चाहिये। ''ईं कारे यक रंगा बवद'' वह भी नहीं। जानबूझकर धोखा देता है, सामने जो देख रहा है। अरे भई वह अन्तर में बैठा है, उसको हम कैसे धोखा दे सकते हैं ? हमारे हजूर फर्मायां करते थे कि पांच साल का बच्चा हो तो उसके सामने हम कोई पाप नहीं करते। वह परमात्मा, वह गुरु पावर हमारे अन्तर बैठी है। हमारे हर एक काम को देख रही है। हम उससे कैसे छुपा सकते हैं ? हजूरी होनी चाहिये। बात तो इतनी है। काम बन जायेगा।

**सिमरन करो गुरु को सेवो चल रहो आज गगन में,**

कहते हैं, अब करो क्या भई ? कहते हैं सिमरन करो और गुरु की प्रसन्नता लो। उसके हुक्म की बजावरी करो। जैसे वह कहे वैसा जीवन बनाओ। दो बातें करो। यह करके क्या होगा ? तुम आज ही गगन पर चल रहो। गगन किसको कहते हैं ? यह गगन कहते हैं, (दोनों आँखों के ऊपर) रूह का ठिकाना यहां है। मरते आपने आदमी देखे हैं कि नहीं ? नीचे चक्र टूटते हैं, कंठ बजता है, आँख फिर जाती है। अभी ज़िन्दा है। अन्धे को आवाज़ दो, कहता हैं, हाँ भाई। यहां (आंखों के पीछे) ज़ोर देता है। तुम यहां हो। पिंड को छोड़ना है ना। सेंन्ट प्लूटार्क कहता है कि जो Mystery of the beyond में Initiate किये जाते हैं, जो इस तरफ अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठकर अनुभव को पाने की तरफ, उनको युक्ति मिल जाती है, हिदायत मिलती है, वेह ऐसा ही तजर्बा पिण्ड के छोड़ने का करते हैं, जैसे अन्त समय रूह पिंड को छोड़ती है। पिंड को तो छोड़ना है। तो कहते हैं आज ही गगन पर चल रहो। किस तरह से ? गुरु जैसे हिदायत दे उसके मुताबिक काम करने से। वह क्या कहता है ? कहते हैं सिमरन से करो। अब पिण्ड को छोड़ कर ऊपर आने के कई तरीके हैं। एक तो प्राणों

और सुरत दोनों को समेटना है। अन्तर में कुम्भक करके फिर नाद का अनुभव होता है। सन्तों ने यह देखकर कि फि जमाना हम उसके काबिल नहीं रहे, प्राणों के संयम के वह लम्बे साधन हैं, मुश्किल हैं, हम Hereditarily fit नहीं रहे क्योंकि आयु कम हो गई, निर्बल जीव हो गये हैं। इसलिये उन्होंने प्राणों को बीच से निकाल दिया है। Eliminate कर दिया है। उन्होंने यह कहा कि सुरत को एकत्र कर लो, प्राणों को छोड़ दो, काम करने दो। प्राणों की तरफ तवज्जो न दो। प्राण अपना काम कर रहे हैं पिण्ड में हर वक्त खून दौरा कर रहा है। खुराक हज़म हो रही है। यह प्राणों का काम है। स्वांस चल रहे हैं, नाखून चढ़ रहे हैं, बाल उग रहे हैं। हमें पता नहीं। अपने आप हो रहा है। कहते हैं, ऐसे ही इसको होने दो। छोड़ दो। सिर्फ सुरत को एकत्र करके। कैसे ? कहते हैं सिमरन द्वारा करो। सिमरन से सुरत को रूह के मरकज पर एकत्र करके गगन पर जाओ। जिसम बेहिस (निश्चित) हो जाये।

**चूँजे हिस बेरू नियामद आदमी,**
**बाशद अज़ तसवीरे गैबी अजनबी ।**

जब तक इन हिसों से आदमी ऊपर नहीं आता वह जो गैब की तसबीर है उससे इन्सान ला इल्म रहता है। पिण्ड से ऊपर आये तो ऊपर देखे ना। देखिये, एक मकान हो। उसकी छत है। उसकी सौ पौड़ियाँ हैं। आप बीस पौड़ियाँ चढ़ गये,तीस चढ़ गये, पचास चढ़ गये, क्या ऊपर की छत का हाल आपको नज़र आएगा ? कहते हैं नहीं। जब तक सौ की सौ पोढ़ियाँ चढ़ो ऊपर नज़र नहीं आता कि क्या हो रहा है । इसी तरह पूर्ण तौर पर पिण्ड छोड़ कर रूह चली जाए, ऊपर, अन्तर में परमात्मा की ज्योति और उसकी श्रुति भी हो रही है भई। दोनों दिखाई भी देंगे और सुनाई भी देंगे। तो कहते हैं कि आज ही गगन पर आ जाओ। कल पर नहीं छोड़ो, आज ही गगन पर आ जाओ। कहते हैं कैसे ? कि सिमरन द्वारा। यही गुरु नानक साहब ने इसका उपदेश दिया है जपजी साहब में।

**इक दो जीभाँ लख होये, लख होवे लख बीस ।**

एक जीभ से लाख जीभें बन जायें। और कहते हैं और बीस लाख बन जायें, बीस गुणा बढ़ जायें ।

**एते राह पत पौड़ियां चढ़िये होय अतीत ।**

इतनी जीभों के साथ उसका सिमरन करो, इस सिमरन करने से पति के महल को चढ़ने की यह पौड़ियां हैं। जो चढ़ गए, ''चढ़िए होत अतीत।'' उससे एक हो जायेंगे। तो सुरत को सिमरत से एकत्र कर लो। रूह के मरकज़ पर आ जाओ, पिण्ड नीचे छूट जाए, बेहिस हो

जाये, तुम चेतन रूप में अपने अन्तर में जाग उठो। कहते हैं यह आज ही कर लो। कल पर मत छोड़ो। जब तक आप इस बाहर जिस्म-जिस्मानियत में बन्धे पड़े हो, हकीकत को नहीं पा सकोगे। Except you be born anew you cannot see the kingdom of God, जब तक तुम नये सिरे से, नई दुनिया में पैदा नहीं, न पिण्ड को छोड़ा, नहीं दुनिया से हटे, न नई दुनिया में पैदा हुए, कहते हैं जब तक यह नहीं होगा तुम परमात्मा की बादशाहत को नहीं देख सकोगे। सब महात्मा एक ही बात कर रहे हैं। फिर ! मौलाना रूम साहब ने कहा, क्या ?

**बमीर ए दोस्त पेश अज मर्ग अगर भी जिन्दगी खाही ।**

अगर तू हमेशा के जीवन को पाना चाहता है तो मौत से पहले मरना सीख। इस जिस्म से फायदा उठा लो, यही मनुष्य जीवन में यह काम तुम कर सकते हो, और किसी में नहीं। तो जितने इसके साधन हैं न अपराविद्या के, वे ज़मीन की तैयारी के लिए हैं। मगर पिण्ड से ऊपर आने का सामान किसी अनुभवी पुरुष से होगा। बात बड़ी साफ है। तो कहते हैं, आज ही भाई गगन पर आओ सिमरन द्वारा। आसान तरीका भी बतला दिया है। तो कहते हैं, कब? कहते हैं आज ही। ''चल रहो आज गगन में।'' अगर आज रूह ऊपर आने लग जाये, मौत का काम आसान हो गया कि नहीं ? मौत के समय क्या होता है ? रूह ही पिण्ड को छोड़ती है। जब तुम रोज़-रोज़ ऊपर आने लग गये, ''दिन में सौ-सौ बार'', कबीर साहब कहते हैं। जब चाहो।

**गुरुमुख आवैं जाये निसंक ।**

मौत का खौफ नहीं रहेगा।

(12) **कल की खबर काल फिर लेगा, वहां तुम जलो अगन में ।**

कहते हैं, कल पर मत छोड़ो। कल का जो कब्ज़ा है वह काल के हाथ में है। पछताना पड़ेगा, दुःख उठाना पड़ेगा। अगर आज ही पिण्ड से ऊपर आना सीख गये दुनिया की Attachment जाती रहेगी, अन्तर नाम का रस आने लगेगा। फिर तुम बार-बार नहीं आओगे। कल कल करते हुये, मुआफ करना ये दिन आ गये, अभी तक अन्तर नहीं गये। जिनको युक्ति मिली भी है, वे भी, 'कल करेंगे भई, अब राज़ी होकर करेंगे, जब फलाना काम हो जायेगा तो फिर करेंगे। वे कल-कल करते हुए कल-कल में फंस गये। कल-कल कहते हैं दुविधा में Worries में, कल करते कल कल में फंस गये। फिर ! कल कैसे आये ? कल कहते हैं आराम को, शांति कैसे आये ? कहते हैं कल पर मत छोड़ो, वह काल के हाथ में है। तुमको पछताना पड़ेगा, आज ही गगन पर चलो।

हमारे हजूर, एक बंगाली क्लर्क था, उसका वाकिया सुनाया करते थे, कि उनके दफ्तर में एक बंगाली क्लर्क था। वह क्या करता था, शाम को दफ्तर से आना, नौकर को कहना कि भई तुम रोटी पका कर खा लो, मेरी रोटी रख दो। उसने बैठ जाना। जब अन्तर में रस आये, तब रोटी खानी। कई बार नौ बजने, कई बार दस बज जाने। कई बार ग्यारह बारह ! एक एक दो दो बज जाने, रोटी नहीं खाते जब तक अन्तर का रस न आये। यह क्यों वह सुनाया करते थे? इसलिये कि हम उससे सबक लें। हम भी जब तक उस रस को, आत्मा को रस न दें, खुराक न दें, जिसम को रोटी न दें। बात तो यह थी। हम सुनते रहे खाली। उसको समझा नहीं।

यसू मसीह साहब जब जिसम छोड़ने लगे, तो लोगों ने कहा, महाराज हमें कोई उपदेश दे कर जाओ। कहने लगे, भई, जो उनके शिष्य थे, उनको कहने लगे, भई देखो जो काम मैंने तुमको समझाया है, सब कामों को छोड़ कर पहिले इसको मुकम्मल करो फिर और काम करना। कितना ज़रूरी मज़मून है ? The most important and the mostly ignored. कितना ज़रूरी मज़मून है और कितना हम इस तरफ से अनभिल हो रहे हैं। बताओ हमें अक्लमन्द कौन कहेगा। या तो अनजान पुरुष हैं हम या मूढ़ पुरुष हैं। दोनों में से एक ज़रूर हैं। क्या कहोगे ? आपको यही कहना पड़ेगा। अब नहीं जागे, भाईयों तो कब जागोगे ? जो हजूर के नाम लेवा यहां बैठे हैं, उन महापुरुषों के, वह भी चोला छोड़ गये तब भी होश नहीं आई, और अब भी न आये तो कब आयेगी ? बताओ। Wake up जागो। ''चेतकर प्रीत करो सतसंग में।'' काम तो यही करना है। यह आप ही ने करना है मुआफ करना। तुम्हारी जगह न किसी पण्डित ने, ना किसी भाई ने, ना किसी मुल्ला ने, ना किसी पादरी ने काम करना है कि वह तुम्हारी जगह दुआ पढ़ छोड़े, तुम्हारी कल्याण हो जाये। यह तो अपना सिर अपने हाथों से ही धोना पड़ेगा।

**आप न मरिये स्वर्ग न जाइये ।**

इसकी तरफ तवज्जो दो। बड़ा ज़रूरी मज़मून है हमारे मनुष्य जीवन जिसका एक-एक मिनट जो लाखों करोड़ों रुपये से ज्यादा कीमती है, वह उसको बड़ी बेदर्दी से गंवा रहे हो। जाया कर रहे हो।

**कल की खबर काल फिर लेगा, वहां तुम जलो अगन में ।**
**अब ही समझ देर मत करियो, ना जानू क्या होय इस पल में ।**

अब कहते हैं कि भाई समझना है तो अभी समझो। आज ही। कल तक इन्तज़ार न करो, कि रात पड़ जाये। बल्कि आज ही कर लो। पहिले कहा, आज करो कल मत छोड़ो। कहते

हैं कल भी छोड़ो, और आज ही छोड़ो। अब ही कर लो। क्या पता है, कि दम किस वक्त निकल जाये ? कितना ज़रूरी मज़मून है कितनी ताकीद कर रहे हैं, और हम कितने अनर्गल हैं। हम समझते हैं, चलो भई घन्टा, आधा घन्टा, राम-राम कर लिया, काफी है। ना भई। यह जीवन पलट देना पड़ेगा। White washing का मज़मून हीं है, सुफेदी का ऊपर से एक दो दाग हो तो एक दो लेप ऊपर दे दो सफेदी के। छुप जायेगा ना भई। यह दिल के दाग नहीं धोये जायेंगे बाहरी सफाईयों से। तो जीवन को पलटा ही देना पड़ेगा। साधन के वक्त साधन करो, काम के वक्त काम में चित्त को लगाओ। मन खाली हो तो मन को खाली मत रहने दो, इसको गुरु की याद में, महापुरुषों की याद में, उनका (Ideal) सामने रहे, एक ताजियाना मिलता रहता है उनकी याद में और जो वह उन्होंने हुक्म दिया है, नाम का जपना, उसमें रहे या सिमरन में रहे या फिर गुरु की याद रहे। वह ध्वनि जो आठों पहर हो रही है। अखण्ड कीर्तन, वह सुनता रहे। तीनों में एक न एक जगह रहे। मन खाली कभी न रहे। कई भाईयों का ख्याल है चलो भई थोड़ी देर कर लिया, काफी है। दुनियां में खचित थोड़ा हो जाना है। भाई यह अन्तर का नहीं (Change) होगा, काम नहीं बनेगा। यही एक छूटने का उपाय है। जो मनुष्य जीवन से पूरा फायदा उठाना चाहते हैं, उनको ऐसा ही जीवन बनाना पड़ेगा।

**(14) यों समझाय कहें राधा स्वामी, मानो एक वचन में ।**

कहते हैं, वह मालिक कुल इस तरह जो पोल पर बैठा काम कर रहा है, क्या गुरु, आपको खोल-खोल कर समझा रहा है कि एक वचन यह मान लो। और यह वचन क्या है ? ''सिमरन करो गुरु को सेवो, चल रहो आज गगन में।'' इस बात को मान लो। कब ? कहते हैं अब ही। रात को भी नहीं, कल भी नहीं, अब ही। कहते हैं यह वचन मान लो, तुम्हारा काम बन जायेगा। अब ही। जब गगन पर आ गए, मौत का खौफ क्या रह गया ? चलो भाई मैं हाज़िर हूं। यही है ना। हंसी-हंसी, खुशी-खुशी चले जाओगे। यह स्वामीजी महाराज का शब्द था जो आपके सामने रखा गया। आप देखेंगे यह उपदेश किन लोगों को है ? जो भी उस मालिक के पाने के अभिलाषी हैं। यहां समाजों, कौमों, मजहबों का सवाल नहीं, प्रभु के पाने का सवाल है। उसके पाने के लिये हमें क्या करना होगा ? जिन्होंने पाया है उनकी सोहबत अख्त्यार करो। बस। उनके हुक्म के मुताबिक अपना जीवन बनाओ। नेक पाक और सदाचारी इन्सान बनो। बस। दिल-दिल को राह बनाओ, उनकी कमाई भी तुम्हारे अन्तर आने लग जायेगी। उनके अन्तर (Reflection) से। उनकी रूह पिण्ड से पर्वाज करती है, तुम्हारी रूह पिण्ड को छोड़ने लग जाएगी। उनके अन्तर नाम प्रकट है, तुम्हारे अन्तर में नाम प्रकट होने लग

जायेगा। वह सब गुणों के सोमें है। तुम गुणों के Abode बन जाओगे। बस। बात तो इतनी है। As you think so you become यसू मसीह साहब ने बड़ी खूबसूरती से बयान किया कि फलदार दरख्त में जब शाखें लगी रहती हैं तो वह शाखें काट कर किसी और दरख्त में कलम लगा दो पैबन्द लगा दो, तो क्या होता है ? फल आता है उस शाख में, उसकी शकल तो शाख वाले पेड़ की होती है मगर रंग और बू पेड़ वाले दरख्त की जिस पर पैबन्द लगी है। तो मिसाल देते हुए यसू मसीह साहब से कहा कि I am the vines thou art the branches, मैं भई अंगूर का पेड़ हूं, तुम मेरी शाखें हो। जब तक शाखें अंगूर के पेड़ में लगी रहती हैं वह फल ला सकती हैं। जब ना लगे तो फल नहीं लाती। इसी तरह कहते हैं You can not do without me। जब तक तुम्हारी पैबन्द मुझमें नहीं लगेगी, तुम फल नहीं ला सकोगे। यह क्राईस्ट ने कहा। यही सब महात्माओं ने कहा। हाफिज साहब कहते हैं-

**नदारम बाक अज मौजे खतर बा दोस्त पैबन्दम ।**

''नदारम बाक'' अब मुझे कोई भय काल और माया का नहीं रहा भाई, क्योंकि मेरी पैबन्द मेरे दोस्त, गुरु से लग गई है। ''नदारम बाक अज मौजे खतर।'' दुनिया के थपेड़ों, माया कालः के थपेड़ों से अब मुझे कोई डर नहीं रहा क्योंकि मेरी पैबन्द गुरु में लग गई है। आगे कहते हैं, क्यों नहीं रहा ? एक मिसाल देते हैं -

**गरीके आबे हैवां रा गमे मुरदन नये वाशद ।**

जो अमृत में गर्क हो जाये, उसको मौत का खौफ रह जायेगा ? अमृत कहते हैं जो अमर जीवन देने वाली चीज है। जब उसमें गर्क हो गये, तो मौत कहां रह गई ? यह मिसाल देते हैं। रामकृष्ण परमहंस थे। स्वामी विवेकानन्दजी उनके पास गये। एक थाल था, उसमें शहद थी। कहने लगे, विवेकानन्द ! यह शहद की थाली जो है, It is the sea of immortality. यह अमृत का सरोवर है। अगर तुम मक्खी हो तो तुम किस तरफ से खाओगे ? तो कहने लगे कि मैं किनारे बैठ कर खाऊंगा। कहते हैं क्योंकि इस डर से कि मैं इसमें लिबड़ कर मर न जाऊं। कहने लगे It is sea of immmortality, plunge headlong into it. यह तो भई अमृत का सरोवर है इसमें सिर के बल छलांग लगाओ। भई यह तरीका है प्रभु पाने का। इसको किसी लफ्जों में अदा कर लो, जब दिल-दिल से राह बनेगा, काम बन जायेगा जब तक हम प्रभु को नहीं देख सकते तब तक उनकी हिदायत के मुताबिक काम करना होगा जिन्होंने देखा है। बात तो यही है। सब महात्मा यही बात कहते चले गये, कहते हैं, और कहते रहेंगे। ❐

# प्रार्थना सभा के प्रवचन

## डायरी का महत्व

सावन आश्रम में प्रातः शैड में प्रार्थना सभा लगती थी, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को भजन पर बिठाना और भजन सुमिरण सम्बन्धी समस्याओं का स्पष्टीकरण तथा समाधान करना था। प्रार्थना सभा में हजूर महाराज भजन-सुमिरण के बारे में बड़ी पते की बातें बताते थे। हरेक प्रवचन में और सत्संग में हजूर आत्म निरीक्षण अर्थात् जीवन की पड़ताल और उसके लिए डायरी रखने के महत्व पर जोर देते रहे। आत्म निरीक्षण बाहर से हटकर अन्तर्मुख होने का निरन्तर अभ्यास है। अब हम बाहर देखते हैं, दूसरों की त्रुटियों को देखते रहते हैं। बाहर से हटकर अपने आपको देखना शुरु करें तो अन्तर्मुख होना ही पड़ेगा। इसमें निन्दा-चुगली और दूसरों का बुरा चिन्तन करने से भी जो परमार्थ के रास्ते में बड़ी भारी रूकावटे हैं, आप ही छूट जायेंगे। डायरी अपने आप में गुरु का ध्यान और सुमिरण भी है। जहां भी मनसा-वाचा-कर्मणा हम कहीं ठोकर खाते हैं या हमारे पांव लड़खड़ाते हैं, तत्काल मन में ख्याल आता है, डायरी में क्या लिखेंगे ? गुरु को क्या मुंह दिखायेंगे ? गुरु को हर वक्त हाज़र-नाज़र, सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापक जो जानता है, वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकता है ? अन्तर में गुरु के नूरी स्वरूप का दर्शन करें तभी उसकी सार्मथ्य और सर्वज्ञता का भान हो और तभी विश्वास भी सुदृढ़ हो। इसीलिए श्री हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज फ़रमाया करते थे -

''मुझे भाई समझ लो, दोस्त समझ लो, पिता समान समझ लो। मेरे कहने के मुताबिक चलो अन्तर। अन्तर दिव्य मण्डलों में गुरु की शान को देखकर जो चाहो मुझे कह लेना ।''

बाहर से गुरु की सामर्थ्य का हमें क्या परिचय हो सकता है। कितनी ही हम आस्था और विश्वास मन में रखें अधिक से अधिक हम गुरु को पिता समान बुजुर्ग ही समझेंगे और क्या समझ सकते हैं ? वह प्रभु-सत्ता जो गुरु के मानव घट में प्रगट होकर काम कर रही है, उसकी झलक जब तक न दिखे हमें गुरु का सामर्थ्य का भान नहीं हो सकता। डायरी इस अवस्था को पाने की ओर एक बहुत बड़ा कदम है। हजूर महाराज फरमाते हैं कि गुरु से प्यार कैसे बने ? उसका सबसे सीधा तरीका है,प्यार भरी याद, हर वक्त बनी रहे, इतनी प्रबल याद हो कि उसी

की आहें निकले। डायरी रखने वाला निरन्तर गुरु को याद करता है। जब कोई भूल करता है तो गुरु से क्षमा मांगता है, कान पकड़ता है उसके आगे। उठते-बैठते, चलते-फिरते हर वक्त वह चिन्तन-मनन जारी रहता है कि मैंने अमुक भूल की। हे सत्गुरु ! क्षमा करो और शक्ति दो कि आगे ऐसी भूल न हो ।

यह तो डायरी के बारे में कुछ ऊपरी बातें थी। डायरी पर हजूर महाराज ने कई सत्संग प्रवचनों और Seven paths आदि पुस्तिकाओं में भरपूर रौशनी डाली है। प्रार्थना सभा में तो हजूर सबसे पहले यही सवाल पूछते थे कि डायरी रखते हो ? नहीं रखी तो अब रख लो। हजूर स्पष्ट कहते थे कि डायरी न रखने से चीज जो मिलती है वह भी छिन जाती है। जो भजन में तरक्की करना चाहते हैं वह डायरी जरूर रखें जो डायरी रखेंगे उनका भजन अवश्य बनेगा। हजूर महाराज ने शैड में भजन पर बैठने वालों के लिए डायरी रखने की पाबन्दी भी लगा दी थी। जो डायरी नहीं रखते वह शैड में भजन पर भी न बैठे ।

उन्हीं दिनों प्रार्थना सभा में डायरी के सम्बन्ध में एक चमत्कारपूर्ण घटना हुई। एक वृद्धा को हजूर ने आदेश दिया कि तुम डायरी रखा करो। वह डायरी ले गयी। कुछ समय पश्चात हजूर ने पूछा, डायरी रखी है ? उसने डायरी, जो बड़ी संभालकर रखी हुई थी, निकाल कर पेश की। डायरी पर लिखा कुछ नही था। हजूर ने कहा, इस पर कुछ लिखा भी नहीं। कहने लगी, मुझे न पढ़ना आता है न लिखना। फिर कुछ समय पश्चात् हजूर महाराज ने डायरी के बारे में पूछा तो वृद्धा ने वही डायरी फिर पेश कर दी। कोरी की कोरी डायरी थी। हजूर ने हंसकर कहा, इस पर फूल चढ़ाया करो। बुढ़िया ने फूल चढ़ाने शुरू कर दिया। एक दिन प्रार्थना सभा में उस बुढ़िया ने हजूर महाराज को बताया कि मैं डायरी पर फूल चढ़ाती और उसे धूप दिखाती हूं और मुझे गुरु स्वरूप का दर्शन होता है। हजूर ने प्रार्थना सभा में कहा, यह भाव का सवाल है । ❒

**रूहानी सत्संग निःशुल्क भेजे जाते हैं**

Ruhani Satsangs are sent Free of Cost

Please contact :

**KIRPAL SEWASHRAM**

Plot 5-A, IDA Scheme 71-C

INDORE - 452 009 (M.P.)